RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30

प्रेरणा विचार

नवम्बर-2023 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

प्रकाश का सनातन पर्व

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के
कला एवं मीडिया
विद्यार्थियों के लिए

विषय :

- आजादी का अमृत महोत्सव
- भारतीय लोकतंत्र
- जनजातीय समाज
- उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड की संस्कृति
- पर्यावरण
- ग्राम विकास
- स्वाधीनता आन्दोलन
- भविष्य का भारत
- सामाजिक सद्भाव
- धर्म एवं अध्यात्म
- महिला सशक्तीकरण

वर्ग : वृत्तचित्र - कथा फ़िल्में - डॉक्यु ड्रामा
अधिकतम समय : 20 मिनट

15,16 एवं 17 दिसम्बर 2023
स्थान : गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

नगद पुरस्कार मूल्य
₹ 200000/-

SCAN TO REGISTER

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://prernasamvad.in/registerforfilms | Prerna Media | Prernasmedia | @PrernaMedia

नोट - प्रविष्टियों को 05 जून से 30 अक्टूबर 2023 तक भेज सकते हैं।

www.prernasamvad.in 9891360088
email : prernachitrabharti2023@gmail.com

संपर्क सूत्र : अरुण अरोड़ा - +9811338858 | डॉ. पलार्थ मंजुल - +91 9621560373 | डॉ. राजीव रंजन - +91 9871650421 | कार्यालय - +91 9354133754

प्रेरणा विचार

वर्ष -1, अंक - 11

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

सर्वसमावेशक भारतीय संस्कृति 05

सनातन संस्कृति और दीपावली 08

पर्यावरण से जुड़ी सनातन संस्कृति 20

स्वावलंबन का मंत्र गुंजाता उत्तर प्रदेश 26

संपादकीय....04

दीपावली का स्वरूप और वैशिष्ट्य....10

अयोध्या : दीपोत्सव का कीर्तिमान और जनभागीदारी....12

सात समुंदर पार लोकल....13

इजराइल और गाजा पट्टी....14

इजराइल के खिलाफ इस्लामी एकजुटता व भारत का पक्ष....16

भारतीय मीडिया में ड्रैगन का हस्तक्षेप....18

प्राचीन विरासत है – ब्रज की सांझी कला....22

जो जीता वही पोरस....24

संतुलित आहार-विहार से संवरेगा बचपन....28

उत्सव और उल्लास का मास....30

विशेष समाचार....31

प्रश्नोत्तरी....32

हर दिन पावन....33

रामराज्य के आदर्शों का पर्व

सब के शुभ की कामना, अंधेरे को हटाकर जीवन को प्रकाशित करने, नवीन सोच विकसित करने, गिले-शिकवे मिटाने, भूले-भटकों को राह दिखाने तथा असंभव को संभव करने के विश्वास का पर्व है दीपोत्सव। हर अंधेरे कोने तक प्रकाश पहुंचाने का अवसर है दीपोत्सव। रामराज्य के आदर्शों को याद रखने का नाम है दीपोत्सव, वंचितों-पिछड़ों-वनवासियों आदि को मुख्यधारा से जोड़ना है दीपोत्सव।

यूं तो विविधताओं से पूर्ण भारत में प्रकाशोत्सव मनाने के अनेक रूप हैं, परंतु यह मूलतः बुराई पर अच्छाई, अज्ञान पर ज्ञान एवं अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। हजारों वर्षों से प्रकाश उत्सव का मनाया जाना यह प्रदर्शित करता है कि अच्छाई, ज्ञान एवं प्रकाश के लिए संघर्ष न केवल मानव के अंतर्मन में अपितु सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सतत् रूप से जारी है। शायद वर्षों-वर्ष यह और भी ज्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है। सब के शुभ की कामना, अंधेरे को हटाकर जीवन को प्रकाशित करने, नवीन सोच विकसित करने, गिले-शिकवे मिटाने, भूले-भटकों को राह दिखाने तथा असंभव को संभव करने के विश्वास का पर्व है दीपोत्सव। हर अंधेरे कोने तक प्रकाश पहुंचाने का अवसर है दीपोत्सव। रामराज्य के आदर्शों को याद रखने का नाम है दीपोत्सव, वंचितों-पिछड़ों-वनवासियों आदि को मुख्यधारा से जोड़ना है दीपोत्सव। पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादाओं के पालन हेतु 14 वर्षों के लंबे वनवास को सहर्ष स्वीकार कर विषम परिस्थितियों में भी मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में स्थापित होकर अयोध्या लौटे भगवान श्रीराम के प्रति स्वतःस्फूर्त सम्मान के प्रकटीकरण से प्रकाशोत्सव की शुरुआत हुई। श्रीराम ने भाई का हक मारने एवं उनकी पत्नी को जबरन रखने वाले बालि का वध किया और राजपाठ सुग्रीव को सौंप दिया, भीलनी जाति की शबरी के झूठे बेर खाकर सम्मान दिया। जंगलों में घूमते हुए श्रीराम ने जब अनेक हड्डियों के पड़े ढेरों के बारे में जाना कि ये राक्षसों के दलों द्वारा खाए गए ऋषि-मुनियों की हड्डियों के ढेर हैं, तो उन्होंने प्रण किया कि, "निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह"। अर्थात मैं पृथ्वी को राक्षस प्रवृत्ति रहित कर दूंगा।

विडंबना है कि आज देश-दुनिया में बुराई, अज्ञान और अंधकार लगातार बढ़ रहे हैं। दुनिया आज ईर्ष्या-द्वेष से परिवार-समाज विघटन, डाकू, आतंकियों और बहसियों से फैली अशान्ति एवं हिंसा तथा जातीय एवं मजहबी विवादों से उपजी असुरक्षा की शिकार है। अतः आज ऐसे भारतीय नेतृत्व की और अधिक आवश्यकता है जो इन वृतियों को शिकस्त दे सके। भारत में हाल के कुछ निर्णयों में ऐसी प्रतिध्वनि सुनी भी जा सकती है। महिलाओं की सुरक्षा और उन्हें प्रतिनिधित्व देना, ढेर होते बाहुबली एवं माफिया, गरीब और कमजोर वर्ग की जमीन को अनधिकृत कब्जे से मुक्त करने आदि। प्रकाशोत्सव हजारों वर्षों से यह याद दिलाने का कार्य कर रहा है कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए नहीं बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र एवं मानवता के लिए कार्य करना भी है। प्रश्न उठता है कि हम स्वयं प्रकाशित हो समाज के वंचित एवं उपेक्षित हिस्से के जीवन को कैसे प्रकाशित करें? आज दुनिया को विनाश से बचाने के लिए विश्व शान्ति हेतु प्रयास आवश्यक है। महिलाओं, बच्चों, गरीबों, आदिवासियों, दलितों आदि के आत्मनिर्भर एवं पुरुषोत्तम बनने की प्रक्रिया है दीपोत्सव। बालि वध, राजा होते हुए भी संन्यासी की भांति जीवन जीना, समुद्र पर सेतु बनाना, कैकेयी की आज्ञा से 14 वर्ष वन में बिताना, सुग्रीव को राज्य दिलाना, हनुमान, जामवंत, नल तथा नील को भी समय-समय पर नेतृत्व करने का अधिकार देने जैसे कार्यों ने श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया।

केवट हों या सुग्रीव, निषादराज हों या विभीषण, हर जाति एवं समुदाय के साथ मित्रता का रिश्ता श्रीराम ने निभाया। उन्होंने सभी को विकास का अवसर भी दिया। दीपावली जनमानस द्वारा समाज को सुरक्षित रखने वालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर है। राम ने रावण को मारने के लिए अयोध्या के संसाधनों का उपयोग नहीं किया वरन उन्होंने स्वयं संसाधन तैयार किए और उन्हें समाज की भलाई के लिए उपयोग किया। भारत पुनः रामराज्य के आदर्शों को अंगीकार करने की ओर बढ़ रहा है। समाज में सच्चा दीपोत्सव वही है जब सब खुश हों, सबको भरपेट भोजन हो, सबके के लिए न्याय की एक ही तराजू हो, गरीब, पिछड़े, दलितों आदि के बच्चों को इंजीनियर, डॉक्टर, आईएएस, मंत्री आदि बनने के अवसर हों। जब सब मिलकर देश की सुरक्षा को अभेद बनाते हों, जहां सब मिलकर देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाते हों, बेटियां सुरक्षित स्कूल-कॉलेज एवं कार्यस्थल जाती हों। सनातन संस्कृति के विश्व पटल पर फैलने और दुनिया में भड़कती युद्ध की अनेक ज्वालाओं को शांत कर वसुधैव कुटुंबकम् के विचार को अंगीकार करना दुनिया के लिए वास्तविक प्रकाशोत्सव होगा। ■

सर्वसमावेशक भारतीय संस्कृति

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प. पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत द्वारा संघ - स्थापना के 98वें वर्ष पर विजयादशमी उत्सव (24 अक्टूबर, 2023) के अवसर पर दिये उद्‌बोधन के मुख्य अंश-

जी-20 अर्थ केंद्रित विचार अब मानव केंद्रित : हमारा देश, जी-20 नामक प्रमुख राष्ट्रों की परिषद का यजमान रहा। वर्षभर सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्र प्रमुख, मंत्रीगण, प्रशासक तथा मनीषियों के अनेक कार्यक्रम भारत में अनेक स्थानों पर सम्पन्न हुए। भारतीयों के आत्मीय आतिथ्य का अनुभव, भारत का गौरवशाली अतीत तथा वर्तमान की उमंग भरी उड़ान सभी देशों के सहभागियों को प्रभावित कर गई। अफ्रीकी यूनियन को सदस्य के नाते स्वीकृत कराने तथा पहले ही दिन परिषद का घोषणा प्रस्ताव सर्व सहमति से पारित करने में भारत की प्रामाणिक सद्‌भावना तथा राजनयिक कुशलता का अनुभव सबने किया। भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन में वसुधैव कुटुम्बकम् की दिशा जुड़ गई। जी-20 का अर्थ केंद्रित विचार अब मानव केन्द्रित हो गया।

भारतीयों का गौरव व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला कार्य : हमारे देश के खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में पहली बार 100 से अधिक- 107 पदक (28 स्वर्ण, 38 रजत तथा 41 कांस्य) जीतकर हम सबका उत्साहवर्धन किया है। उनका हम अभिनन्दन करते हैं। हमारे वैज्ञानिकों के शास्त्रज्ञान व तन्त्र कुशलता के साथ नेतृत्व की इच्छाशक्ति जुड़ गई। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष युग के इतिहास में पहली बार भारत का विक्रम लैंडर उतरा। समस्त भारतीयों का गौरव व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला यह कार्य सम्पन्न करने वाले वैज्ञानिक तथा उनको बल देने वाला नेतृत्व संपूर्ण देश में अभिनंदित हो रहा है।

रा.स्व.संघ के पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत

नागपुर के स्मृति मंदिर में रा.स्व.संघ के संस्थापक डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार को प्रणाम निवेदित करते हुए डॉ. मोहन भागवत एवं शंकर महादेवन

अपने मन के राम को जागृत करते हुए मन की अयोध्या सजे : संविधान की मूल प्रति के एक पृष्ठ पर जिनका चित्र अंकित है, ऐसे धर्म के मूर्तिमान प्रतीक श्री राम के बालस्वरूप का मंदिर अयोध्या जी में बन रहा है। श्रीराम अपने देश के आचरण की मर्यादा के प्रतीक हैं, कर्तव्य पालन के प्रतीक हैं, स्नेह व करुणा के प्रतीक हैं। अपने-अपने स्थान पर ही ऐसा वातावरण बने। राम मंदिर में श्री रामलला के प्रवेश से प्रत्येक हृदय में अपने मन के राम को जागृत करते हुए मन की अयोध्या सजे व सर्वत्र स्नेह, पुरुषार्थ तथा सद्‌भावना का वातावरण उत्पन्न हो ऐसे, अनेक स्थानों पर परन्तु छोटे छोटे आयोजन करने चाहिए।

वीरांगना रानी दुर्गावती : अस्मिता व स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वाली, उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम के साथ-साथ अपनी प्रशासनिक कुशलता व प्रजा हित दक्षता के लिए आदर्शभूत महारानी दुर्गावती का यह 500वां जयंती वर्ष है। भारतीय महिलाओं के सर्वगामी कर्तृत्व, नेतृत्व क्षमता, उज्ज्वल शील तथा जाज्वल्य देशभक्ति की वे देदीप्यमान आदर्श थीं।

विजयादशमी उत्सव पर मंचस्थ (मध्य में) संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, मुख्य अतिथि पद्मश्री शंकर महादेवन, पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत व अन्य पदाधिकारी

छत्रपति शाहू जी महाराज : प्रजा हित दक्षता तथा प्रशासन क्षमता के साथ, सामाजिक विषमता के जड़मूल से निर्मूलन के लिए जीवनभर अपनी संपूर्ण शक्ति लगाने वाले कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के शासक छत्रपति शाहूजी महाराज का यह 150वां जयंती वर्ष है।

संत श्रीमद् रामलिंग वल्ललार देश की स्वतंत्रता की अलख अपने जीवन के यौवनकाल से ही जगाना प्रारंभ किया, गरीबों के लिए अन्नदान कार्यक्रम हेतु जिनका सुलगाया हुआ पहला चूल्हा आज भी तमिलनाडु में प्रदीप्त है और अपना काम कर रहा है, ऐसे तमिल संत श्रीमद् रामलिंग वल्ललार का 200 वां वर्ष इसी महीने सम्पन्न हो गया। स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक जागृति तथा सामाजिक विषमता के सम्पूर्ण निर्मूलन के लिए वे जीवनभर कार्य करते रहे।

हिमालय क्षेत्र सर्वथा रक्षणीय : हिमालय के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड से लेकर सिक्किम तक लगातार प्राकृतिक आपदाओं का प्राणांतिक खेल हम देख रहे हैं। भविष्य में किसी गंभीर व व्यापक संकट का पूर्वाभास इन घटनाओं के द्वारा हो रहा हो, ऐसी शंकाओं की चर्चा भी है। देश की सीमा सुरक्षा, जल सुरक्षा तथा पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिए भारत की उत्तर सीमा को निश्चित करने वाला यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है, किसी भी कीमत पर सर्वथा रक्षणीय है। सुरक्षा, पर्यावरण, जन सांख्यिकी व विकास की दृष्टि से इस पूरे क्षेत्र को एक इकाई मानकर हिमालय क्षेत्र का विचार करना होगा।

'स्व' आधारित स्वदेशी विकास पथ अपनाएं : अधूरी, निपट जड़वादी तथा पराकोटि की उपभोगवादी दृष्टि पर आधारित विकास पथों के कारण, मानवता व प्रकृति धीरे-धीरे परंतु निश्चित रूप से विनाश की ओर अग्रसर हो रही है। संपूर्ण विश्व में यह चिंता बढ़ी है। उन असफल पथों को त्याग कर अथवा धीरे-धीरे वापस मोड़कर भारतीय मूल्यों पर तथा भारत की समग्र एकात्म दृष्टि पर आधारित, काल सुसंगत व अद्यतन, अपना अलग विकास पथ भारत को बनाना ही पड़ेगा। यह भारत के लिए सर्वथा उपयुक्त तथा विश्व के लिए भी अनुकरणीय प्रतिमानक बन सकेगा। उपनिवेशी मानसिकता से मुक्त होकर, अपने देश में जो है उसको युगानुकूल बनाते हुए, हम अपना 'स्व' आधारित स्वदेशी विकास पथ अपनाएं, यह समय की आवश्यकता है।

मणिपुर हिंसा क्यों हुई? : मणिपुर की वर्तमान स्थिति को देखते हैं तो यह बात ध्यान में आती है। लगभग एक दशक से शांत मणिपुर में अचानक यह आपसी फूट की आग कैसे लग गई? क्या हिंसा करने वाले लोगों में सीमा पार के अतिवादी भी थे? अपने अस्तित्व के भविष्य के प्रति आशंकित मणिपुरी मैतेयी समाज और कुकी समाज के इस आपसी संघर्ष को सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास क्यों और किसके द्वारा हुआ? वर्षों से वहां पर सबकी समदृष्टि से सेवा करने में लगे रा.स्व.संघ जैसे संगठन को बिना कारण इसमें घसीटने का प्रयास करने में किसका निहित स्वार्थ है? इस सीमा क्षेत्र में नागाभूमि व मिजोरम के बीच स्थित मणिपुर में ऐसी अशांति व अस्थिरता का लाभ प्राप्त करने में किन विदेशी सत्ताओं को रुचि हो सकती है? क्या इन घटनाओं के कारण परंपराओं में दक्षिण पूर्व एशिया की भू-राजनीति की भी कोई भूमिका है? देश में मजबूत सरकार के होते हुए भी यह हिंसा किन के बलबूते इतने दिन बेरोकटोक चलती रही है? गत 9 वर्षों से चल रही शान्ति की स्थिति को बरकरार रखना चाहने वाली राज्य सरकार होकर भी यह हिंसा क्यों भड़की और चलती रही? आज की स्थिति में जब संघर्षरत दोनों पक्षों के लोग शांति चाह रहे हैं, उस दिशा में कोई सकारात्मक कदम उठता हुआ दिखते ही कोई हादसा करवा कर, फिर से विद्वेष व हिंसा भड़काने वाली ताकतें कौन सी हैं?

बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता : समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता रहेगी। इस हेतु जहां राजनैतिक इच्छाशक्ति, तदनुरूप सक्रियता एवं कुशलता समय की मांग है, वहीं इसके साथ-साथ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति के कारण उत्पन्न परस्पर अविश्वास की खाई को पाटने में समाज के प्रबुद्ध नेतृत्व को भी एक विशेष भूमिका निभानी होगी। संघ के स्वयंसेवक तो समाज के स्तर पर निरंतर सबकी सेवा व राहत कार्य करते हुए समाज की सज्जनशक्ति का शांति के लिए आह्वान कर रहे हैं। सबको अपना मानकर, सब प्रकार की कीमत देते हुए समझाकर, सुरक्षित, व्यवस्थित, सद्भाव से परिपूर्ण और शान्त रखने के लिए ही संघ का प्रयास रहता है।

मंत्र विप्लव : समाज विरोधी कुछ लोग अपने आपको सांस्कृतिक मार्क्सवादी या वोक यानी जगे हुए कहते हैं। परंतु मार्क्स को भी उन्होंने 1920 दशक से ही भुला रखा है। विश्व की सभी सुव्यवस्था, मांगल्य, संस्कार, तथा संयम से उनका विरोध है। मुट्ठी भर लोगों का नियंत्रण सम्पूर्ण मानवजाति पर हो, इसलिए अराजकता व स्वैराचरण का पुरस्कार, प्रचार व प्रसार करते हैं। माध्यमों तथा अकादमियों को हाथ में लेकर देशों की शिक्षा, संस्कार, राजनीति व सामाजिक वातावरण को भ्रम व भ्रष्टता का शिकार बनाना उनकी कार्यशैली है। आपसी झगड़ों में उलझ कर असमंजस व दुर्बलता में फंसा व टूटा हुआ समाज, अनायास

विजयादशमी उत्सव पर शस्त्र पूजन करते हुए पूज्य सरसंघचालक

ही इन सर्वत्र अपनी ही अधिसत्ता चाहने वाली विध्वंसकारी ताकतों का भक्ष्य बनता है।

मंत्र विप्लव का सही उत्तर समाज की एकता : मंत्र विप्लव का सही उत्तर तो समाज की एकता से ही प्राप्त होना है। हर परिस्थिति में यह एकता का भान ही समाज के विवेक को जागृत रखने वाली वस्तु है। संविधान में भी इस भावनिक एकता की प्राप्ति एक मार्गदर्शक तत्व के नाते उल्लेखित है। हर देश में इस एकता के भाव को पैदा करने वाला अपना-अपना धरातल अलग-अलग रहता है। हमारा यह देश एक राष्ट्र के नाते, एक समाज के नाते, विश्व के इतिहास के सारे उतार चढ़ाव पार कर आज भी अपने भूतकाल के सूत्र से अविछिन्न सम्पर्क बनाए रखकर जीवित खड़ा है।

यूनान, मिस्र, रोमा सब मिट गए जहां से।
अब तक मगर है बाकी नामो निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

हमारी सर्वसमावेशक संस्कृति : भारत के बाहर के लोगों की बुद्धि चकित हो जाए, परंतु मन आकर्षित हो जाए, ऐसी एकता की परंपरा हमारी विरासत में हमको मिली है। उसका रहस्य क्या है? निःसंदेह वह हमारी सर्व समावेशक संस्कृति है। पूजा, परंपरा, भाषा, प्रान्त, जाति-पाति इत्यादि भेदों से ऊपर उठकर, अपने कुटुंब से संपूर्ण विश्व कुटुंब तक आत्मीयता को विस्तार देने वाली हमारी आचरण की व जीवन जीने की रीति है।

महापुरुष अनुकरणीय : अपनी स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के निमित्त हमने स्वतन्त्रता संग्राम के महापुरुषों का स्मरण किया। हमारे धर्म, संस्कृति, समाज व देश की रक्षा, समय समय पर उनमें आवश्यक सुधार तथा उनके वैभव का संवर्धन जिन महापुरुषों के कारण हुआ, वे हमारे कर्तृत्व सम्पन्न पूर्वज हम सभी के गौरवनिधान हैं तथा अनुकरणीय हैं।

हमारी एकता के अक्षुण्ण सूत्र : हमारे देश में विद्यमान सभी भाषा, प्रान्त, पंथ, संप्रदाय, जाति, उपजाति इत्यादि विविधताओं को एक सूत्र में बांधकर एक राष्ट्र के रूप में खड़ा करने वाले तीन तत्व (मातृभूमि की भक्ति, पूर्वज गौरव, व सबकी समान संस्कृति) हमारी एकता का अक्षुण्ण सूत्र हैं।

देश का पैसा देश में ही काम आए : वर्ष 2025 से 2026 का वर्ष संघ के 100 वर्ष पूरे होने के बाद का वर्ष है। सभी क्षेत्रों में संघ के स्वयंसेवक कदम बढ़ाएंगे। समाज के आचरण में, उच्चारण में संपूर्ण समाज और देश के प्रति अपनत्व की भावना प्रकट हो। मंदिर, पानी, श्मशान में कहीं भेदभाव बाकी है, तो वह समाप्त हो। परिवार के सभी सदस्यों में नित्य मंगल संवाद, संस्कारित व्यवहार व संवेदनशीलता बनी रहे, बढ़ती रहे व उनके द्वारा समाज की सेवा होती रहे। सृष्टि के साथ संबंधों का आचरण अपने घर से पानी बचाकर, प्लास्टिक हटाकर व घर आंगन में तथा आसपास हरियाली बढ़ाकर हो। स्वदेशी के आचरण से स्वनिर्भरता व स्वावलंबन बढ़े, फिजूलखर्ची बंद हो। देश का रोजगार बढ़े व देश का पैसा देश में ही काम आए।

हमारे अमर राष्ट्र के नवोत्थान का प्रयोजन : समाज की एकता, सजगता व सभी दिशा में निस्वार्थ उद्यम, जनहितकारी शासन व जनोन्मुख प्रशासन 'स्व' के अधिष्ठान पर खड़े होकर परस्पर सहयोगपूर्वक प्रयासरत रहते हैं, तभी राष्ट्र बल वैभव सम्पन्न बनता है। बल और वैभव से सम्पन्न राष्ट्र के पास जब हमारी सनातन संस्कृति जैसी सबको अपना कुटुंब मानने वाली, तमस से प्रकाश की ओर ले जाने वाली, असत् से सत् की ओर बढ़ाने वाली तथा मर्त्य जीवन से सार्थकता के अमृत जीवन की ओर ले जाने वाली संस्कृति होती है, तब वह राष्ट्र, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाते हुए विश्व को सुख-शांतिमय नवजीवन का वरदान प्रदान करता है। सद्य काल में हमारे अमर राष्ट्र के नवोत्थान का यही प्रयोजन है। ■

''देश अगर गीत है, तो स्वयंसेवक उसके पीछे खड़ी सरगम हैं''

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शंकर महादेवन

"किसी भी धुन के पीछे सरगम होती है जैसे कंप्यूटर के पीछे बाइनरी कोड होते हैं। इसी प्रकार, यदि हमारा देश एक गीत है, तो स्वयंसेवक विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए उसके पीछे खड़ी सरगम हैं।" ये विचार नागपुर में विजयादशमी उत्सव कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि पद्मश्री शंकर महादेवन ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमारे अखंड भारत का जो विचार है हमारे कल्चर, ट्रेडिशन को बचाकर रखने में इस देश में आप लोगों से ज्यादा किसी और का योगदान नहीं है।

शंकर महादेवन ने कहा कि जब मैं स्वयंसेवकों को देखता हूं वे कोई भी घटना या समस्या हो, आवश्यकता हो अपने देश के लिए शांति से पीछे खड़े होकर काम करते हैं। अगर हम कहेंगे कि हमारा देश एक गीत है तो स्वयंसेवक उसके पीछे की सरगम हैं। जो गीत को जान देती है। उन्होंने कहा कि भारत और भारतीय नागरिकों को पूरा विश्व सम्मान की नजरों से देखने लगा है। इसलिए मैं कहता हूं कि जहां भी हों, जहां भी जाएं सर उठाकर गर्व से कहो मैं भारत का नागरिक हूं। मैं संगीत और गीतों के माध्यम से अपनी संस्कृति, शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के बारे में भविष्य की पीढ़ियों को बताना, शिक्षित और प्रसारित करना अपना कर्तव्य समझता हूं। हमारी संस्कृति और परंपरा की रक्षा में आप सभी का योगदान अतुलनीय है

सनातन संस्कृति और दीपावली

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

दीपावली मात्र एक पर्व ही नहीं अपितु यह अमर सिद्धांत है। जो सभी के बीच अपनी सहज स्वीकार्यता बनाने में सफल हुआ है। यह अटल सत्य है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का सम्बल इस महान पर्व को अमर बनाने में अनुपमेय योगदान देता आया है। दीपावली मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन धारा सनातन संस्कृति का इस धरा को अक्षुण्ण वरदान है।

पृथ्वी के अक्ष के झुकाव के कारण उत्तरी गोलार्ध की हवाओं के चलते इसका स्वरूप ऐसा बना कि लगभग दो करोड़ 47 लाख नौ हजार वर्ग किमी से अधिक क्षेत्रफल वाले भूक्षेत्र में जो संस्कृति विकसित हुई उसे सनातन संस्कृति नाम मिला। उत्तरी गोलार्ध की हवाएं जब दक्षिणी गोलार्ध में जाती हैं तो वहां की भूस्थलीय परिस्थिति बदल देती हैं। वैसे यह एक प्राकृतिक संरचना का यथार्थ है। तथापि हजारों वर्षों में उत्तरी गोलार्ध ने दक्षिणी गोलार्ध पर अपनी सांस्कृतिक हवाओं का भी प्रचुर प्रभाव दर्शाया है। उत्तरी गोलार्ध के भूक्षेत्र में विकसित संस्कृति के महात्मय को कालान्तर में बहुत उपेक्षित किया गया। यह कटु सत्य है कि सनातन संस्कृति को मानने वालों के मानस को विदीर्ण करने वाली यह पीड़ा सहनी पड़ी। पर काल के करवट बदलने के साथ यह सत्य पुनर्स्थापित हो गया है कि सनातन संस्कृति सौर मण्डल के इस ग्रह की वास्तविकता का परिचायक है।

उत्तरी गोलार्ध के करीब दो दर्जन देशों में इस समय (21वीं शताब्दी में) सनातन हिन्दू संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। सभी जानते हैं कि 19वीं शताब्दी को ब्रिटेन तदन्तर 20वीं शताब्दी को अमेरिका का समय कहा जाता रहा है। उसी तरह वर्तमान 21वीं शताब्दी को सारा जगत भारत की सदी मान रहा है। हिन्दू सनातन संस्कृति को उत्तरी गोलार्ध से जोड़ने का हेतु स्पष्ट है। सनातन संस्कृति का प्रादुर्भाव इसी गोलार्ध में हुआ। सदी की काल गणना से पहले वैदिक संस्कृति विकसित हो चुकी थी। ऋग्वेद की रचना का काल अनेक अन्वेषकों के अनुसार आज से लगभग 1500–2000 ईसा पूर्व का है। यह ग्रन्थ इसी उत्तरी गोलार्ध की विलक्षण कृति है। उत्तरी गोलार्ध में सर्वप्रथम मानव सभ्यता ने विकास किरणों का प्रस्फुटन अनुभव किया। मनुष्य को विवेक की अनुभूति ही मानव संस्कृति के विकास की प्रथम किरण थी। उत्तरी गोलार्ध की इस घटना का यह अप्रतिम महात्मय है। जिसे कभी नकारा नहीं गया।

जिस संस्कृति का प्रकटन मानव के विवेक के कारण प्रकट हुआ वही सनातन हिन्दू संस्कृति के रूप में जगत में स्वीकार्य हुई। इस संस्कृति के प्रकटन की घटना ऐसे समय में हुई जब कोई उठकर इसका उत्सव नहीं मना सका। उत्सवों की सूझ इस संस्कृति के लोगों को कुछ देर से हुई होगी। तब सनातन संस्कृति को स्वीकार करने वाले किसी प्रतिस्पर्धा में नहीं थे। इसलिए किसी को इसके नामकरण की चिन्ता नहीं हुई होगी। सब कुछ क्रमशः सहजता से होता गया। जो संस्कृति धरती पर प्रथम बार अवतरित हुई वह स्थायित्व का भाव लिये सनातन कही जाने लगी। ऐसी संस्कृति को अक्षुण्ण, कालजयी और सनातन कहने वालों को तृप्ति का भाव तब हुआ जब स्वयं नारायण ने इसकी अक्षुण्णता को अमरत्व देने के लिए अवतार लिये। धर्म की अथाह गहराइयों तक विस्तार पा चुकी यह संस्कृति एक गोलार्ध से वायु के शाश्वत प्रवाह के साथ दूसरे गोलार्ध तक विस्तार लेने लगी।

सनातन संस्कृति ने ऐसे कालजयी धर्म का सृजन किया जो समय के प्रवाह के साथ हिन्दू धर्म कहलाया। जिसकी विशिष्टताएं अवर्णनीय हैं। जिसने सृष्टि के प्रत्येक अवयव को धर्म की छाया प्रदान की। चर अचर से लेकर मानव से देवत्व तक धर्म की परिधि में सबको बांध दिया। पृथ्वी ने एक संस्कृति पायी। एक धर्म पाया। जिसकी संरचना को नारायण की महाशक्ति ने स्वयं न केवल परिभाषित किया अपितु उसकी रक्षा के लिए समय समय

पर धरती पर आकर मानक स्थापित किये। नारायण की शक्ति एक है। ईश्वर एक है। अनेक नहीं। सनातन संस्कृति में एक ईश्वर के नाना रूप हैं। अर्थात नारायण को नाना रूपों में मान्यता दी जाती है। सभी का केन्द्र बिन्दु एक है। यही अनेकरूपता में एकरूपता का शाश्वत सिद्धांत इस संस्कृति का अमर रूप सिद्धांत है।

दीपावली जैसे अनेक उत्सव, पर्व सनातन संस्कृति के अमरत्व को प्रकट करते हैं। जिनमें इस संस्कृति की निर्बाध विराटता झलकती है। दीपावली को लोग श्रीराम के काल से जोड़कर देखते हैं। रावण पर श्रीराम की विजय के उपरान्त अयोध्या में हुआ दीपोत्सव प्रथम था ऐसा कहने वाले बहुत मिल जाएंगे। किन्तु इस अवसर पर पहली बार दीपोत्सव की सच्चाई कौन प्रमाणित करेगा। यह प्रश्न उठाने वाले बहुत हैं। श्रीराम त्रेता युग में अवतरित हुए। सतयुग में मां दुर्गा के अवतरण की घटना भी बहुत बड़ी थी। समस्त देव शक्तियों ने सायुज्ज होकर देवी अर्थात नारी शक्ति को अवतार लेने के लिए मनाया था। महादुर्गा जब प्रकट हुईं तो कोटि सहस्त्र दीपों से उनकी आरती उतारी गयी। समस्त दैवीय शक्तियों ने यह आरती की। मां दुर्गा को महिषासुर के वध के लिए मनाया। उनकी सब विधि से पूजा अर्चना की। भारत ही नहीं समस्त उत्तरी गोलार्ध में यदि दीपोत्सव किसी न किसी रूप में प्रचलित है तो आदि शक्ति की आराधना के नाना रूप दो करोड़ वर्ग किमी. से बड़े भूक्षेत्र की एक बड़ी वास्तविकता है।

बात बड़ी कितनी भी हो यदि उसको जानने वालों की समझ छोटी हो तो वह न्यून लगती है। यही त्रासदी सनातन संस्कृति के संग देखी जाती रही है। जिन्हें अपने पड़ोसी का नाम नहीं पता होता वह पूछ बैठते हैं कि सनातन का अर्थ क्या है। उनकी अज्ञानता ही उनसे प्रश्न कराती है कि यदि सनातन संस्कृति इतनी प्राचीन है तो उसको किसने प्रारम्भ किया होगा। उसने इसे अपनी पहचान क्यों नहीं दी। ऐसे निपट अज्ञानी कल्पना नहीं कर पाते कि पन्थ, रिलीजन या मजहब की परिभाषा में धर्म को नहीं पिरोया जा सकता। सनातन संस्कृति अभेद्य दुर्ग की वह प्राचीर है जिसके बहुत परे दूसरी संस्कृति और पन्थ प्रकट होते और मिटते रहे। यह प्राचीर सनातन संस्कृति को पल्लवित होने का अवसर हजारों वर्ष पहले से देती आ रही है। आज भी वह जस की तस है। अभी तो काल की अनन्त परतें चढ़नी शेष हैं। युग बदलेंगे। पर यह संस्कृति पृथ्वी के अनन्त काल तक अपने विकास का क्रम बनाये रहेगी। कभी न रुकने की संस्कृति का यह विराट रथ अपने शाश्वत सिद्धान्तों की रेख छोड़ता बढ़ता रहेगा ।

वैदिक संस्कृति को समाप्त होते देखने की परिकल्पना करने वाला पाश्चात्य जगत सहसा अपना मानस बदल कर अपनी बातों, निष्कर्षों के प्रमाण वैदिक कथनों से देने लगा। पर भारत का बहुसंख्य आत्म विस्मृत समाज इस तथ्य को समझ ही नहीं पाया। पाश्चात्य जगत विशेषतः अमेरिका और यूरोप के विज्ञानी

संस्कृति के जन्म की एक मधुर प्रतीति बनकर जब असंख्य दीप जल उठे होंगे तो सभी ने इसे उत्सव मान लिया यही तो है भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम पर्व दीपावली का यथार्थ।

समूहों ने चिल्ला कर बताना शुरू किया कि श्रीसेतुसमुद्रम एक वास्तविकता है। तब हमारी निमीलित आंखें खुलीं। तब हमने गैंती कुदाल लेकर श्रीरामसेतु की ओर बढ़ रहे लोगों को रोका। तब हमने न्यायालय में नया शपथ पत्र देकर कहा कि भूल हो गयी, पर सब ठीक हो गया ऐसा नहीं है। श्रीराम को पुरखों की श्रेणी में हर भारतीय को रखने में अभी तक संकोच लगता है। यह किसी आत्म विस्मृत समाज की त्रासदी भर नहीं अभिशाप की स्थिति है।

सनातन संस्कृति का पर्व दीपावली यह एक उत्सव भर नहीं है। वैदिक ऋषि कहते हैं - हे परमात्मा मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए। हे परमात्मा मुझे अज्ञान से ज्ञान की ओर ले चलिये। मानव की आर्त पुकार है कि हे सर्वमान्य परमात्मन मुझे असत्य से सत्य की ओर जाने का मार्ग दिखाइए। मुझे अधर्म से धर्म के पथ पर चलने की सूझ दीजिए। मनुष्य की यह गुहार उत्सव मात्र नहीं है। अपितु संस्कृति के प्रादुर्भाव को दर्शाती है। सभ्यता जब जन्म लेने को थी तब मनुष्य में यह आतुरता एक तीव्र अकुलाहट बनकर वाणी से फूट पड़ी होगी। संस्कृति के जन्म की एक मधुर प्रतीति बनकर जब असंख्य दीप जल उठे होंगे तो सभी ने इसे उत्सव मान लिया। यही तो है भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम पर्व दीपावली का यथार्थ। दीपावली के नाना रूप पूरे उत्तरी गोलार्ध में दिखायी पड़ते हैं। भारत में उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक अनेकता दिखती है। रूप अनेक पर भाव एक है। सर्वत्र सत्यान्वेषण है। सभी का हेतु अज्ञान और अधर्म पर जीत से जुड़ा है। सभी अंधकार को सभ्यता का शत्रु मानते हैं। कुछ वर्ष पूर्व शक्तिमान अमेरिका ने सत्ता के अपने श्रेष्ठतम केन्द्र ह्वाइट हाउस में दीपावली मनायी तो उस समय कहा कि हम भारत की संस्कृति के इस महान उत्सव को हृदय से आदर देते हैं। हम मानते हैं कि मानव सभ्यता के विकास क्रम ने इस उत्सव को कभी प्रारम्भ होते देखा था।

एशिया के विशाल भूखण्ड में हिन्दू संस्कृति से प्रसूत कई पन्थ, मत विस्तार लिये हुए हैं। यह सभी दीपोत्सव को अपने पन्थों में पूरी गंभीरता से स्वीकारते हैं। हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन और नाना अन्य पन्थों में इस उत्सव की मान्यता और स्वीकार्यता है। उत्तरी गोलार्ध में विस्तारित हर समाज को यह पर्व आकर्षित करता आया है। सभी किसी न किसी रूप में इसे स्वीकारते हैं। इंडोनेशिया से लेकर कई मुस्लिम देशों में भी यह पर्व बदले रूपों में उपस्थित है। देशों की सीमाओं को नकारते हुए एशिया से अफ्रीका, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका तक यह उत्सव अपनी उपस्थिति दर्शाता है। यह मात्र एक पर्व नहीं अमर सिद्धांत है। जो सभी के बीच अपनी सहज स्वीकार्यता बनाने में सफल हुआ है। यह अटल सत्य है कि श्रीराम का सम्बल इस महान पर्व को अमर बनाने में अनुपमेय योगदान देता आया है। दीपावली मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन धारा सनातन संस्कृति का इस धरा को अक्षुण्ण वरदान है। ■

दीपावली का स्वरूप और वैशिष्ट्य

राम जी तिवारी

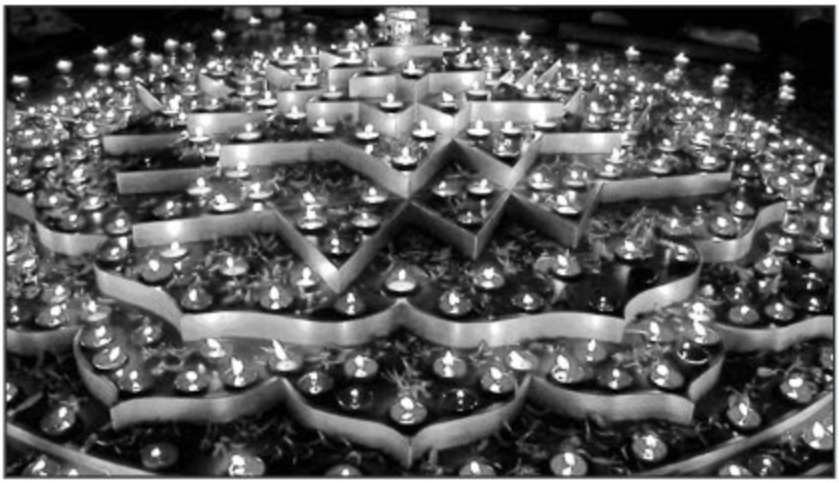

दीपावली पर्वों का समूह है। यह भारत का सबसे बड़ा त्यौहार है। इस पर्व का धार्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय महत्व के साथ वैज्ञानिक आधार भी है। देश के साथ-साथ विदेशों में भी जहां भारतीय रहते हैं, वे इस त्यौहार को बहुत धूमधाम से मनाते हैं। सनातन संस्कृति के अनुसार हर त्यौहार की तरह दीप पर्व यानी दीपावली के पीछे भी तमाम ऐतिहासिक और पौराणिक कथाएं हैं।

ऊर्जा, सृष्टि के संचालन का आधार है। इसके आद्य, आधारभूत नियामक और सौर मंडल के अधिष्ठाता देव सूर्य हैं। सूर्य देव की इस नैसर्गिकता का मानवीय प्रकटीकरण है 'दीप'। जिसको हम आज अनेक रूपों यथा- मिट्टी के दीये, मोमबत्ती या बल्ब आदि में भी प्रकट करते हैं। दीपक की लौ ही ऊर्जा का प्रस्फुटन है। यही लौ जीवन में उत्साह, उमंग और प्रकाश का सर्जन करती है। स्कन्द पुराण में दीपक को सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला कहा गया है। सनातन संस्कृति में कार्तिक मास की अमावस्या को दीपों की श्रृंखला अर्थात दीपावली से जुड़े अनेक आध्यात्मिक और ऐतिहासिक तथ्य हैं। क्योंकि माता लक्ष्मी एवं भगवान धन्वंतरि का प्रकट होना, त्रेतायुग में रावण का वध कर भगवान राम का 14 वर्ष बाद अयोध्या आगमन, भगवान कृष्ण द्वारा असुर वध से उपजा उल्लास, राजा बलि को पाताल का राज प्रदान करना आदि दीपावली से आधिकारिक एवं आध्यात्मिक रूप से जुड़े हैं। इसलिए इस दिन दीप जलाकर शक्तियों का आह्वान कर हम सनातनता का निर्वाह कर रहे हैं। इसके अलावा इसी दिन जैन धर्म के लोग इसे महावीर के मोक्ष दिवस के रूप में, सिख समुदाय इसे बन्दी छोड़ दिवस के रूप में मनाते हैं। देश के कुछ हिस्सों में दीपावली यम और नचिकेता की कथा (कठोपनिषद्) के साथ जुड़ी है। नचिकेता की कथा सत्य बनाम असत्य और सच्चे धन के बारे में प्रेरणादायी है।

दीपावली पर्व से कुछ ऐतिहासिक घटनाएं भी जुड़ी हैं। इसी क्रम में गुप्त वंश के प्रसिद्ध सम्राट विक्रमादित्य के राज्याभिषेक के समय पूरे राज्य में दीपोत्सव मनाया गया था। दीपावली के ही दिन महान समाज सुधारक आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने निर्वाण प्राप्त किया था। परम संत स्वामी रामतीर्थ का जन्म कार्तिक मास की अमावस्या को और उनका देह त्याग भी इसी दिन होने का अनूठा उदाहरण भी हमें मिलता है। इस तरह दीप पर्व अपने वैशिष्ट्य और वैविध्यता का संगम है।

दीपावली के विविध स्वरूप

वाराणसी, उत्तर प्रदेश : यहां पर्व को देव दीपावली के नाम से जाना जाता है। पौराणिक मान्यतानुसार इस दौरान देवी-देवता गंगा में डुबकी लगाने के लिए धरती पर आते हैं। गंगा नदी में प्रार्थना और दीये जलाएं जाते हैं। देव दीपावली कार्तिक मास की पूर्णिमा में आती है और दिवाली के 15 दिन बाद।

काली पूजा, पश्चिम बंगाल : दीपावली पर्व पर विशेषकर पश्चिम बंगाल और पूर्वी भारत में, देवी दुर्गा की अवतार मां काली पूजन का विधान है। यहां के निवासी तीन दिनों तक मां काली की पूजा करते हैं। कुछ हिस्सों में लोग व्रत रखते हैं और धन की देवी मां लक्ष्मी का पूजन भी करते हैं। पश्चिम बंगाल में ही अगमबागिश द्वारा पूजा का विधान है। यह काली पूजा का एक प्रकार है। मां काली के सबसे प्रतिष्ठित तांत्रिक या

पुजारी अगमबागिश, देवी को प्रसन्न करने के लिए एक कठिन अनुष्ठान करते हैं।

कौरिया काठी, ओडिशा : यहां दीप पर्व के अवसर पर, लोग कौरिया काठी (एक अनुष्ठान) करते हैं। इसमें लोग अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं। वे अपने पूर्वजों को बुलाने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए जूट की लकड़ियां जलाते हैं। इस दौरान, उड़िया देवी लक्ष्मी, भगवान गणेश और देवी काली की पूजा करते हैं।

दुनिया भर में दिवाली : भारत के बाहर भी कई देशों में, भारतीय आबादी का एक बड़ा समूह वहां वर्षों से रह रहा है। इसलिए, आइए कुछ देशों पर नजर डालते हैं कि कैसे वहां दीपावली को भारत से थोड़ा अलग तरीके से मनाया जाता है।

नेपाल : पड़ोसी देश नेपाल में दीपावली को 'तिहार' के रूप में मनाया जाता है। यह दशहरा के बाद देश में दूसरा सबसे ज्यादा मनाया जाने वाला त्यौहार है, जिसे वहां 'दशईं' के नाम से जाना जाता है। इस दिन, स्थानीय लोग भगवान यम की पूजा करते हैं। पांच दिनों तक चलने वाले इस त्यौहार में, एक दिन को 'कुकुर तिहार' के नाम से जाना जाता है, जहां कुत्तों और इंसानों के बीच के अनमोल रिश्ते की पूजा की जाती है। यह त्यौहार पूरी दुनिया में भी बेहद लोकप्रिय हो गया है।

सिंगापुर : इस दिन को लोकप्रिय रूप से दीपावली के रूप में जाना जाता है। 'लिटिल इंडिया' नामक क्षेत्र के हर गली को रोशनी से खूबसूरती से सजाया जाता है। दीपावली की सभी आवश्यक खरीदारी करने के लिए 'टेक्का मार्केट' नामक क्षेत्र लोकप्रिय है। हिंदू भी श्री मरिअम्मन मंदिर जाते हैं जो चाइनाटाउन में स्थित है।

मलेशिया : मलेशिया में भी सिंगापुर की तरह जहां हिंदू आबादी है वहां, इसे 'हरि दीवाली' के रूप में मनाया जाता है। करीब-करीब भारत की तरह यहां भी इस पर्व को धूमधाम और रोशनी के साथ मनाया जाता है।

दीपावली सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाये जाने वाला विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। कुल मिलाकर दीपावली अलौकिक उत्स का लौकिक रूप में लोक एवं जीवन दोनों के उन्नयन, संयम, नियम, प्रेम, हर्ष के प्रतीक स्वरूप इस त्यौहार का अस्तित्व बनाता है।

फिजी : देश में बड़ी संख्या में हिंदुओं के रहने के चलते, फिजी भी दीपावली को उत्साह से मनाता है। यहां एक राष्ट्रीय अवकाश भी है। इस महापर्व को धूमधाम से मनाने के लिए घरों में सामूहिक रूप से एकत्र होकर बड़ा आयोजन किया जाता है।

मॉरीशस : पर्यटन के लिए लोकप्रिय इस द्वीप की लगभग 50 प्रतिशत आबादी हिंदू है। इसलिए यहां दीप पर्व एक ऐसा त्यौहार है जो सभी परंपराओं के साथ बड़ी भव्यता और दिव्यता से मनाया जाता है। भारत की तरह यहां भी पटाखे, दीपक, सजावट आदि शामिल हैं।

त्रिनिदाद और टोबैगो : उन्नीसवीं सदी के अंत में, भारतीय राज्यों ओडिशा और बिहार से लाखों लोगों त्रिनिदाद गये। बाद में, इन भारतीयों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर स्थानीय आबादी के साथ घुलमिल गए। इसलिए भारत के रीति-रिवाजों को वहां जीवित रखा है। त्रिनिदाद सरकार ने 1966 में दीवाली को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। यहां दीपावली नौ दिनों तक मनाई जाती है।

इसी तरह अन्य देश जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, गुयाना, मलेशिया, श्रीलंका और कई अन्य देश जहां बड़ी संख्या में भारतीय हैं, दीप पर्व को बहुत ही उत्साह से मनाते हैं। इस तरह दीपावली सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाया जाने वाला विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। कुल मिलाकर दीपावली अलौकिक उत्स का लौकिक रूप में लोक एवं जीवन दोनों के उन्नयन, संयम, नियम, प्रेम, हर्ष के प्रतीक स्वरूप इस त्यौहार का अस्तित्व बनाता है। यह त्यौहार देवी आराधना एवं साधना से सूक्ष्म एवं स्थूल, अलौकिक एवं लौकिक, सुख एवं शान्ति, यश एवं वैभव आदि सभी भावों को प्रकट करने की मानव में सामर्थ्य और शक्ति पैदा करता है। **(समन्वयक संपादक, प्रेरणा विचार पत्रिका)** ■

अयोध्या : दीपोत्सव का कीर्तिमान और जनभागीदारी

त्रेतायुग तो नहीं लेकिन अहसास वही, छटा अलौकिक, अकथ्य और ऐतिहासिक, हर देशवासी भाव विभोर और गदगद। हो भी क्यों न क्योंकि अयोध्या में दीपोत्सव की भव्यता और दिव्यता का प्रकाश समूचे विश्व को आह्लादित और प्रकाशित कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्वरूप और अद्वितीय जनभागीदारी के साथ दीपोत्सव हर बार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्वयं के पुराने कीर्तिमान के एक कदम आगे नये मानक स्थापित करता है। दीप प्रज्ज्वलन की लौ अमृत प्रकाश के रूप में संपूर्ण विश्व को सनातन संस्कृति से आलोकमय कर रही है।

दीपोत्सव की दिव्यता ऐसी कि हर अयोध्यावासी और भक्तगण मानो त्रेतायुग में अपने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के साथ दीवाली मना रहे हों। धार्मिक ग्रंथों में जिस प्रकार त्रेतायुग की दीवाली का वर्णन है उसी भाव को जीवंत करने के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार दृढ़प्रतिज्ञ है। इस बार करीब 500 वर्षों के उपरांत रामलाला का भव्य मंदिर भी पूर्ण होने के करीब है। ऐसे में रामलला के जल्द ही विराजमान होने की खुशी से प्रदेश ही नहीं बल्कि देशभर के सभी भक्तजनों को खुशियों के पंख लग गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी की जोड़ी अयोध्या को उसके पुराने गौरव और भव्य स्वरूप को वापस दिलाने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या का कायाकल्प कर रहे हैं। इसी क्रम में पिछले 7 वर्ष से अयोध्या में भव्य दीपोत्सव का आयोजन हो रहा है। रामनगरी में दीपोत्सव का यह सातवां सफल आयोजन है। हर बार दीपोत्सव के मौके पर अयोध्या में दीपक जलाने की श्रृंखला से नये विश्व कीर्तमान बनते हैं। इस बार भी करीब 21 लाख से अधिक दीपक से अयोध्या की छटा देवलोक से कम नहीं होगी।

पूरी अयोध्या रंग-बिरंगी लाइटों से जगमग ऐसी मनभावन रहती है कि मानो साक्षात भगवान राम स्वयं विराजमान हों।

पावन सरयू के तट पर प्रभु श्री राम की अयोध्या में दिव्य दीपोत्सव के अमृत प्रकाश से दीप्त होकर पूरी अयोध्या राममय रहती है। हर बार सर्वाधिक दीप प्रज्ज्वलन का विश्व कीर्तिमान सनातन मूल्यों के प्रति दृढ़ होते जन-विश्वास का ही प्रकटीकरण है।

पावन सरयू के तट पर प्रभु श्री राम की अयोध्या में दिव्य दीपोत्सव के अमृत प्रकाश से दीप्त होकर पूरी अयोध्या राममय प्रकाश पुंज से नहायी रहती है। दीपोत्सव के जरिए हर बार सर्वाधिक दीप प्रज्वलन का विश्व कीर्तिमान सनातन मूल्यों के प्रति दृढ़ होते जन-विश्वास का ही प्रकटीकरण है। अयोध्या में दीपोत्सव की परंपरा योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के साथ साल 2017 से शुरू हुई। तब से हर बार दीपावली के अवसर पर अयोध्या दीपोत्सव और जनभागीदारी भारतीय संस्कृति का संपूर्ण दिग्दर्शन बनकर उभरा है। दीपोत्सव के हिस्से के रूप में इसमें शोभायात्रा, प्रोजेक्शन मैपिंग, लेजर शो, रामलीला, सरयू आरती और गिनीज बुक्स ऑफ रिकॉर्ड के अनुसार लैंप लाइटिंग और गिनती आदि शामिल रहते हैं। पिछली बार 30 से अधिक घाटों में दीप जलाए गये थे। इस बार दीपों की संख्या अधिक होने के कारण घाटों की संख्या भी करीब 40 तक पहुंचने की संभावना है। यानी राम की पैड़ी के आसपास का पूरा परिसर दीपों से जगमग दिव्य दीपोत्सव का साक्षी रहेगा।

अयोध्या में दीपोत्सव

वर्ष	दीयों की संख्या
वर्ष 2017	1 लाख से अधिक
वर्ष 2018	3 लाख से अधिक
वर्ष 2019	4 लाख से अधिक
वर्ष 2020	6 लाख से अधिक
वर्ष 2021	9 लाख से अधिक
वर्ष 2022	15 लाख से अधिक
वर्ष 2023	24 लाख संभावित

ऐसे में इस बार का दीपोत्सव कई मायने में और भी भव्य और दिव्य है। क्योंकि रामलला का मंदिर अपने अंतिम चरण की ओर है। निश्चित ही अयोध्या का दिव्य दीपोत्सव अपने देश की सनातन संस्कृति और प्राचीन गौरव के प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का अद्वितीय माध्यम बनकर उभरा है।

-प्रेरणा विचार डेस्क ■

सात समुंदर पार लोकल

कहते हैं जहां चाह वहां रहा। इसको एक बार फिर चरितार्थ कर दिखाया गाजियाबाद की रहने वाली रेनु ने। उनके मिट्टी के सभी उत्पाद लोकल फॉर ग्लोबल और आत्मनिर्भरता की मिशाल हैं। आज वह समाज में स्वावलंबन और नारी सशक्तिकरण की संबल हैं।

भावनाएं मनुष्य के व्यक्तिगत निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। आप जिस प्रकार की भावना से ओतप्रोत होंगे आपका व्यक्तित्व व कृतित्व भी उसी प्रकार होगा। बात करें यदि नारी शक्ति की तो वह भावनाओं का सागर है। कुछ कर गुजरने की इच्छा व क्षमता उनमें सदैव विद्यमान रहती है, तभी तो विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन व नियंत्रण के साथ आगे बढ़ने के लिए दृढ़संकल्पित रहती है। आज बात करेंगे ऐसी ही सशक्त आत्मनिर्भर महिला की, जिसने अपने सकारात्मक दृष्टि से न केवल अपने पिता के मिट्टी के पारंपरिक व्यवसाय को विश्व पटल पर पहचान दिलाई अपितु कई महिलाओं को आत्मनिर्भर भी बनाया। ऐसा ही हैं गाजियाबाद की रहने वाली रेनु। रेनु के परिवार में उनके पिता का मिट्टी का व्यवसाय था। उन्होंने शिक्षा ग्रहण की तथा एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त होने के पश्चात नौकरी शुरू कर दी। विवाह के उपरान्त भी उनकी नौकरी की निरन्तरता बनी रही। बाद में साल 2016 में पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ने के साथ ही उनकी निरन्तरता टूट गयी। लेकिन उनके अंदर यह भावना बनी रही कि उन्हें अपनी शिक्षा का उपयोग स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की दिशा में करना है। परिणामस्वरूप दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास ने उन्हें सफलता के नये पथ पर अग्रसर कर दिया।

कालांतर में रेनु ने अपने पिता के व्यवसाय को नयी बुलंदियों पर ले जाने का संकल्प लिया और बीड़ा उठाया पिता के पारंपरिक मिट्टी के विशेष उत्पाद (बर्तन) को सात समुंदर पार पहुंचाने का। रेनु ने अपनी इसी पुश्तैनी कला को नये सांचे में ढाला। उन सभी डिजाइन व आकार का गहराई से अध्ययन किया जो वैश्विक मानदंडों के अनुसार हो। साथ ही मार्केटिंग कैसे की जाए और किस प्रकार की डिजाइन से बाजार में मांग उत्पन्न होगी इस पर भी गहन शोध किया। उन सभी पहलुओं पर बारीकी से फोकस किया जिससे पारंपरिक मिट्टी को नया रूप और रंग मिल सके। और इस पूरी यात्रा में रेनु के पति ने उन्हें भरपूर सहयोग किया। पेशे से इंजीनियर रेनु के पति ने दिन-रात कंधे से कंधा मिलाकर उनके हौसले को पंख लगाया। उनके इस भगीरथ प्रयास को सफलता मिली साल 2019 में, जब

> **"मिट्टी से बर्तन सदियों से बनते चले आ रहे हैं। हमने उनको आधुनिक युग में कैसे उपयोग किया जाए इस बारे में विचार कर मॉर्डन लुक दिया। ताकि हर घर में बर्तन उपयोग हो सके।- रेनु"**

उन्हें पहला विदेशी ऑर्डर मिला। लोकल फॉर ग्लोबल विचार के साथ इस पहले एक्सपोर्ट ने उनके विश्वास को दृढ़ किया। इस ऑर्डर के बाद प्रोत्साहित होकर रेनु ने अपने सभी डिजाइन को उसी प्रकार का आकार और मानक स्तर दिया जो विदेशों में पसंद किये जाते हैं।

इस तरह इस आत्मनिर्भरता की यात्रा में पिता, भाई और परिवार के संग रेनु ने अपनी शिक्षा का सदुपयोग करते हुए पारंपरिक व्यवसाय को एक नयी दिशा दी। आज रेनु के आत्मनिर्भरता और लगन के चलते उनके उत्पाद देश की दहलीज को पार कर विदेशों में एक अलग पहचान बना चुके हैं। अब इस कार्य में परिवार के साथ-साथ कई महिलाएं भी जुड़ी हैं, जो बर्तनों पर डिजाइन व पेंटिंग करती हैं। रेनु का कहना है कि वो सभी डिजाइन व आकार वैश्विक बाजार को ध्यान में रखकर ही करती हैं। भारतीय बाजार में अपने प्रोडक्ट नहीं उतारती हैं। महिला उद्यमी को अग्रसर करने के लिए उन्होंने सरकार के प्रयासों की सराहना की। अभी सितम्बर में ग्रेटर नोएडा में आयोजित इंटरनेशनल एक्सपो में उन्हें कई बड़े ऑर्डर मिले हैं। आज उनके पास 400 से अधिक उत्पाद हैं। और इन विशेष बर्तनों की देश के बाहर करीब 10 देशों में मांग है। इस तरह रेनु समाज के लिए मिसाल और इसकी प्रेरक भी हैं कि किस तरह शिक्षा का उपयोग समाज विशेषकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में किया जा सकता है।

निर्यात : कनाडा, दुबई, सऊदी अरब, ओमान, कुवैत, न्यूजीलैंड, अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका।

मिट्टी के बर्तन : कूकर, फ्राई पैन, कढ़ाई, पानी का बोतल, पिज्जा पैन, बटन वाली सुराही, बाउल, विशेष डोंगा, इंडक्शन कूकर और भगोना जैसे कई दैनिक उपयोग के बर्तन हैं।

-प्रेरणा विचार डेस्क ■

इजराइल और गाजा पट्टी

विक्रम उपाध्याय
वरिष्ठ पत्रकार

इजराइल और गाजा पट्टी के हमास आतंकवादियों के बीच कई दिनों से भीषण जंग जारी है। हमास के रॉकेट हमले के बाद आग बबूला इजराइल गाजा पट्टी की पूर्ण घेराबंदी कर उसे सबक सिखाने के लिए लगातार बमबारी कर रहा है। ऐसे में आइए जानते हैं क्या है गाजा पट्टी का इतिहास और उसकी पृष्ठभूमि।

इजराइल ने दस लाख से अधिक लोगों को उत्तरी गाजा छोड़ने का आदेश दिया है। उसका मकसद फिलहाल हमास के हर ठिकाने को ध्वस्त करना बताया जा रहा है। पर अरब और अन्य मुस्लिम देश यह प्रचार करने में लगे हैं कि इजराइल गाजा में रह रहे सभी 23 लाख लोगों को उजाड़ कर उस पर पुनः कब्जा करने की योजना बना रहा है। उल्लेखनीय है कि गाजा में ज्यादातर 1948 के अरब-इजराइली युद्ध के दौरान अपने घरों से निकाल दिए गए लोगों के ही वंशज हैं। भले ही इस आरोप में कम दम हो कि इजराइल गाजा पर कब्जा करने की नीयत से वहां घुसा है, पर इसमें संदेह नहीं कि वह इस क्षेत्र को ऐसा बना देना चाहता है, जहां वर्षों तक किसी इंसान के रहने की गुंजाइश न हो। इजराइली अखबार येदिओथ अहरोनोथ में मेजर जनरल जियोरा एइलैंड ने लिखा भी है; "इजराइल के पास गाजा को एक ऐसी जगह में बदलने के अलावा कोई चारा नहीं है, जहां अस्थायी या स्थायी रूप से रहना असंभव हो।" उन्होंने आगे लिखा है – "गाजा एक ऐसी जगह बन जाएगी जहां कोई इंसान नहीं रह पाएगा।" इजराइल के रक्षा मंत्री योव गैलेंट ने कहा, 'हम मानव रूपी जानवरों से लड़ रहे हैं, और हम उसी के अनुसार कार्य कर रहे हैं।' मेजर जनरल घासन एलियन ने घोषणा की कि गाजा में, 'न बिजली होगी और न पानी। विनाश ही होगा। तुम नर्क चाहते थे; तुम्हें नरक ही मिलेगा।'

दूसरा नकबा : कुछ आलोचक इजराइल की इस कार्रवाई को दूसरा नकबा की संज्ञा दे रहे हैं। फिलिस्तीनी हर 15 मई को नकबा, या 'तबाही' के दिन के रूप में याद करते हैं। क्योंकि इसी दिन 1948 को इजराइल अस्तित्व में आया। तब फिलिस्तीनियों को भारी संख्या में बेदखली का सामना काना पड़ा था।

इजराइल का गठन एक हिंसक प्रक्रिया के साथ ही हुआ था। 1947 और 1949 के बीच, 19 लाख की आबादी में से कम से कम साढ़े सात लाख फिलिस्तीनियों को राज्य की सीमाओं के बाहर खदेड़ कर शरणार्थी बना दिया गया था। इस हिंसा में लगभग 15,000 फिलिस्तीनियों की जान भी गयी थी।

फिलिस्तीनी चरमपंथियों, जिसमें मुख्य रूप से हमास है और इजराइली सेना के बीच लगातार हिंसक संघर्ष हो रहा है। 2006 से लेकर हालिया घेराबंदी तक छह बार गाजा में इजराइली सेना घुस चुकी है। इजराइल का दावा है कि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यह क्षेत्र अभी भी अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत कानूनी रूप से इजरायली सैन्य के कब्जे में है। इसी अधिकार के तहत इजराइल ने गाजा पट्टी से बिजली, पानी और ईंधन की आपूर्ति रोक दी है।

गाजा पट्टी का इतिहास व भूगोल : प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) में ओटोमन साम्राज्य का शासन समाप्त होने के बाद, गाजा क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया, फिर राष्ट्र संघ द्वारा जनादेश कराये जाने के बाद फिलिस्तीन का हिस्सा बन गया। नवम्बर 1947 में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की महासभा ने अरब-यहूदी विभाजन की योजना को स्वीकार कर लिया, जिसके तहत गाजा शहर और आसपास के क्षेत्र अरबों को आवंटित किया जाना था, परन्तु ब्रिटिश शासनादेश 15 मई, 1948 को समाप्त हो गया और उसी दिन पहला अरब - इजराइल युद्ध शुरू हुआ। 1948 की शरद ऋतु में भारी लड़ाई के परिणामस्वरूप, अरब कब्जे वाले शहर के आसपास का क्षेत्र 25 मील (40 किमी) लंबे और 4–5 मील (6–8 किमी) चौड़े क्षेत्र की एक पट्टी में सिमट गया। यह क्षेत्र गाजा पट्टी के नाम से जाना जाने लगा।

मिस्र सैन्य शासन के अधीन : गाजा पट्टी क्षेत्र 1949 से 1956 तक और फिर 1957 से 1967 तक मिस्र के सैन्य शासन के अधीन रहा, लेकिन मिस्र सरकार ने इसे अपना क्षेत्र नहीं माना और ना ही शरणार्थियों को मिस्र का नागरिक बनने की अनुमति दी। शरणार्थियों का भरण-पोषण यूएनआरडब्ल्यूए की सहायता से किया जाता रहा। 1956 में एक बार इस पट्टी पर इजराइल ने कब्जा कर लिया था, पर अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद 1957 में यह पट्टी मिस्र को पुनः सौंप दी गई। जून 1967 में छह-दिन के युद्ध के बाद गाजा पट्टी पर फिर से इजराइल ने कब्जा कर लिया। 1994 में इजराइल ने ओस्लो समझौते की शर्तों के तहत गाजा पट्टी में फिलिस्तीनी प्राधिकरण बनाने पर सहमति व्यक्त कर दी और फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन (पीएलओ) ने भी इस पर हस्ताक्षर किए।

गाजा पट्टी क्षेत्र 1949 से 1956 तक और फिर 1957 से 1967 तक मिस्र के सैन्य शासन के अधीन रहा। लेकिन मिस्र सरकार ने इसे अपना क्षेत्र नहीं माना और ना ही शरणार्थियों को मिस्र का नागरिक बनने की अनुमति दी। शरणार्थियों का भरण-पोषण यूएनआरडब्ल्यूए की सहायता से किया जाता रहा।

गाजा पट्टी सिनाई प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्व में भूमध्य सागर के साथ 140 वर्ग मील (363 वर्ग किमी) का क्षेत्र है। गाजा पट्टी एक घनी आबादी वाला क्षेत्र होने के साथ साथ फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए एक मात्र बसेरा है। 2023 में इसकी अनुमानित जनसंख्या 2,226,544 है। गाजा पट्टी अपेक्षाकृत समतल तटीय मैदान पर स्थित है। यह दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही आबादी वाला क्षेत्र बन गया है। शांति के समय में कुछ फिलिस्तीनी छोटी-मोटी नौकरियां करने प्रतिदिन इजराइल जाते थे। उन्हें वहां रात को रुकने की अनुमति नहीं है। पर ज्यादातर इजराइली अपनी सीमा बंद ही रखते हैं। गाजा पट्टी के कुछ हिस्सों को पड़ोसी मिस्र से जोड़ने वाली भूमिगत सुरंगे भी हैं। इन सुरंगों से फिलिस्तीनी भोजन, ईंधन, दवा, इलेक्ट्रॉनिक्स और हथियारों की तस्करी भी करते हैं। ■

इजराइल के खिलाफ इस्लामी एकजुटता व भारत का पक्ष

डॉ. अरुण प्रकाश
दार्शनिक निबंधकार

इजराइल ने आत्मरक्षा में जैसे ही पलटवार किया और नागरिकों का नरसंहार करने वालों को दंडित करना शुरू किया तो दुनिया भर के मुसलमानों ने मानवाधिकार का रोना शुरू कर दिया। हालांकि, यह वही मुस्लिम देश हैं जिन्होंने यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स पर हस्ताक्षर नहीं किए थे और इसके स्थान पर कायरो डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स इन इस्लाम को लागू किया है।

गाजा पट्टी में सक्रिय आतंकी संगठन हमास ने 7 अक्टूबर को सुबह-सुबह इजराइल की सेना और नागरिकों को निशाना बनाकर आक्रमण कर दिया। इस हमले में एक हजार से अधिक इजराइलियों की मौत हो चुकी है, और हमास करीब 200 लोगों को बंधक बनाकर ले गया है। मरने वालों में बड़ी संख्या इजराइल के किबुत्ज़ समूह के लोगों की है, जिन्होंने उस रेगिस्तानी इलाकों में खेती-बाड़ी को समृद्ध किया, साथ ही क्षेत्र के बौद्धिक विकास, रक्षा और राजनीतिक नेतृत्व में भी अहम भूमिका निभाई। यह समूह इजराइल की स्थापना से चार दशक पूर्व से वहां के रेगिस्तान को हरा-भरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। इस समुदाय के उस भूमि पर अनेक उपकार हैं, बावजूद इसके उन्हें यहूदी होने के चलते प्राण देने पड़े।

वहीं, अपनी मजहबी प्रतिबद्धता के अनुरूप इस्लामी समाज ने हमास के हमले का बढ़ा-चढ़ाकर मंडन किया और इसे बहादुरी का काम बताया गया। हमास के बर्बर कृत्य को मुस्लिम समाज ने महान व पवित्र अभियान की तरह मंडन किया। इधर, जैसे इजराइल ने आत्मरक्षा में पलटवार किया और नागरिकों का नरसंहार करने वालों को दंडित करना शुरू किया तो दुनिया भर के मुसलमानों ने मानवाधिकार का रोना शुरू कर दिया। यूएन के हस्तक्षेप व उसकी मानवाधिकार सिफारिशों को लागू करने की बात होने लगी।

हालांकि, यह वही मुस्लिम देश हैं जिन्होंने यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स पर हस्ताक्षर नहीं किए थे और इसके स्थान पर कायरो डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स इन इस्लाम को लागू किया है। जोकि, मानवाधिकार की व्याख्या को 'अल्लाह के अधीन व आदम के वंशजों' तक सीमित करती है। इस डिक्लेरेशन में भी यूएन कमेटी वाली बातें दोहराई गई हैं, लेकिन एक तरह से वह मुसलमानों पर लागू होती हैं, गैर-मुसलमानों को वह कुरान के हिसाब से ट्रीट करने पर कायम हैं। फिर यह लोग किस मुंह से मानवाधिकार की बात करते हैं? ध्यान रहे कि यह मुसलमानों की अज्ञानता या बेशर्मी नहीं है, बल्कि उनकी नीति का हिस्सा है।

जैसे शिकारी, शिकार के जीवन बचाने के संघर्ष को अपने विरुद्ध मानता है व उसे अपराध की तरह देखता है, यही हाल मुसलमानों का है। वह अपनी बर्बरता का शिकार हुए लोगों का फिर से आबाद होना नहीं देख पा रहे हैं। साथ ही, वह बर्बरता की शिकार जातियों, पंथ, समाज या देश के पुनरुद्धार को अपने ईमान के खिलाफ मानते हैं और उसके खिलाफ़ जिहाद जायज हो जाता है।

इतिहास साक्षी है कि कैसे यहूदियों ने अपनी कर्मठता से यह देश बनाया है। उन्होंने अरब के लोगों से अपनी ही मातृभूमि खरीदी है। फिर उस रेगिस्तान को मेहनत से

हरा-भरा किया है। खारे पानी को मीठा बनाया है, फिर वहां बसे हैं। इजराइल बनने व अरबी नियंत्रण से पूर्व भी यहूदी उस स्थान पर शताब्दियों तक रहे हैं। उन्हें इस्लामी बर्बरता ने ही बेघर किया था। बीच के कालखंड में यहूदियों ने बार-बार अपना उजड़ा घर बसाया लेकिन इस्लामी संख्या व बर्बरता बढ़ती गई और यहूदियों को दुनिया भर में दर-दर की ठोकर खानी पड़ी। यहूदियों को दुनिया में जितने कष्ट झेलने पड़े, जितने अपराध उनके साथ हुए उन सबका हिसाब अरब देशों पर बनता है। लेकिन, वह अंतरराष्ट्रीय कानूनों के प्रशस्त बिंदु को मानते नहीं, इतिहास जानते नहीं, उन्हें बस ईमान दिखता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इजराइल के देश के रूप में नक्शे पर आने तक फिलिस्तीन नाम का कोई देश नहीं था। इजराइल सेटलमेंट में भी शेष भूमि को अरब स्टेट कहा गया था न कि फिलिस्तीन। अरबों से खरीदी हुई भूमि पर ही यहूदी कायदों वाली सरकार व देश बनना मुसलमानों को अच्छा नहीं लगा और उन्होंने इजराइल पर हमला कर दिया। इजराइल की जवाबी कार्रवाई में इस्लामी देशों के पांव उखड़ गए तो उन्होंने फिलिस्तीन मूवमेंट शुरू किया। दुनियाभर में बर्बर धर्मांतरण व आक्रमण कर इस्लामी राज्य कायम करने मुसलमानों को यहूदियों का अपनी पहचान के साथ आबाद होना अच्छा नहीं लगा। और, इजराइल से लड़कर जब वह हार गए तो नीति बदल ली और कथित फिलिस्तीन के लोगों को दुनियाभर में पीड़ित की तरह दिखाया गया। जबकि सच्चाई यह है कि इस मूवमेंट के सहारे मुसलमानों ने इजराइल को हर संभव खत्म करने का षड्यंत्र किये। आज गाजा में आधी आबादी बच्चों की है, यानी तेजी से जनसंख्या बढ़ाई गई ताकि डेमोग्राफिक बढ़त ली जा सके। दूसरी ओर फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को फिलिस्तीनी लोगों का प्रतिनिधि बताकर, उसे शांति के मसीहा की तरह दिखाया गया और उसने भारत सहित कई देशों का समर्थन कर लिया। इस बीच अरब स्टेट (प्रस्तावित फिलिस्तीन) में हमास और इस्लामी जिहाद जैसे संगठन खड़े कर दिये गए। इन आतंकी संगठनों ने गाजा में शुरंग बनाकर आतंकी गतिविधियों को तेज कर दिया। आज उसी का परिणाम है कि निर्दोष यहूदियों को सोकर उठने से पूर्व चिरनिद्रा में सोना पड़ा।

कुल मिलाकर एक बात तो स्पष्ट है कि इजराइल के खिलाफ मुस्लिम देशों की एकजुटता न इस्लामी बंधुत्व के चलते है, न ही फिलिस्तीन की आजादी व वहां के लोगों की भलाई के लिए, बल्कि वह यहूदियों के अस्तित्व के नकार के सिद्धांत पर कायम है।

इजराइल से घृणा इस्लामी ईमान का हिस्सा है और, उसे मिटाने का संकल्प इसी ईमान को लागू करना है। हालांकि, इस्लाम का दार्शनिक धरातल यहूदियों से ही लिया गया है। अब्राहमिक पंथों का आदि पंथ तो युदाइज्म ही है। ईसाइयों ने भी उन्हीं के दार्शनिक भूमि का उपयोग किया है। अलबत्ता इस्लाम इसका श्रेय यहूदियों को नहीं देता, लेकिन वह उनके ही नबियों का नाम बदलकर अपनाता है और उनके पंथ का अस्तित्व नकार देता है। इस्लाम यहूदियों के समूल नाश का संकल्प बारंबार दोहराता है। इजराइल के खिलाफ मुस्लिम देशों व मुसलमानों की एकजुटता का आधार व लक्ष्य बस यही है।

भारत द्विराष्ट्र सिद्धांत में गणतांत्रिक सरकार चाहता है और उसे ही समर्थन व सहयोग देने को प्रतिबद्ध है। वहीं, भारत का हमास के हमले की निंदा व इजराइल के आत्मरक्षा का समर्थन, आतंकवाद विरोधी उसकी ज़ीरो टॉलरेंस पॉलिसी का हिस्सा है।

हालांकि, बदले समय के साथ ईसाई यहूदियों के साथ आये हैं क्योंकि यहूदियों की मेधा का लाभ ईसाइयों को सर्वाधिक मिला है। वहीं, अब मुसलमानों के खिलाफ ईसाइयों के मोर्चे को भी इजरायल की अगुवाई में मजबूत किया गया है। मिडिल ईस्ट में ईसाई ताकतें इतनी मजबूत नहीं है कि वह सीधे मुस्लिम देशों से मुकाबला कर सकें इसलिए वह इजराइल को आगे करते हैं। फिलहाल यह तो वह कारक हैं जिनकी परिणति आज सामने है। यहां एक बात और ध्यान देने की है कि इजराइल व हमास के बीच छिड़े ताजे संघर्ष का रुख अब्राहमिक पंथों के अन्तः संघर्ष को और मुखर कर रहा है। हालांकि, अमेरिका के खुलकर इजराइल को समर्थन करने से कई ईसाई बहुल देश चाहकर भी इजराइल का समर्थन नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि उनका अमेरिका से स्वाभाविक दुराग्रह है।

इन सबके बीच दुनिया भर में भारत के अभूतपूर्व स्टैंड की भी चर्चा है। भारत के स्टैंड की चर्चा स्वाभाविक इसलिए भी है क्योंकि यह अब्राहमिक पंथों के संघर्ष और अमेरिका केंद्रित ध्रुवों की जोर आजमाइश है। भारत इन दोनों प्रभाव क्षेत्र से मुक्त है। बावजूद इसके भारत के स्टैंड में कुछ द्वंद्वात्मक नहीं है। भारत फिलिस्तीन का देश के रूप में समर्थन करता रहा है। यह उसकी शांति प्रतिबद्धता व गणतांत्रिक मूल्यों में निष्ठा के चलते है। हालांकि इसे अभी थोड़ा ठीक से समझने की जरूरत है, भारत द्विराष्ट्र सिद्धांत में गणतांत्रिक सरकार चाहता है और उसे ही समर्थन व सहयोग देने को प्रतिबद्ध है। वहीं, भारत का हमास के हमले की निंदा व इजराइल के आत्मरक्षा का समर्थन, आतंकवाद विरोधी उसकी जीरो टॉलरेंस पॉलिसी का हिस्सा है। वैसे भी भारत पीएलओ को फिलिस्तीनी लोगों का प्रतिनिधि मानता है, हमास को नहीं। गाजा पट्टी को हमास के नियंत्रण में छोड़कर पीएलओ ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना ही भरोसा गंवाया है। भारत इसे भी अच्छे से समझता है। भारत की स्पष्ट व स्वतंत्र नीति बहुत प्रभावी है। ■

भारतीय मीडिया में ड्रैगन का हस्तक्षेप

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

चीन एक बेहद शातिर और चालाक देश है। जो किसी न किसी रूप में भारत के खिलाफ साजिश रचता रहता है। पहले उसने चीनी मोबाइल एप के जरिए देश की सुरक्षा और एकता में सेंध लगाने की कोशिश की। मुंह की खाने के बाद एक बार फिर ड्रैगन, कम्युनिस्ट लॉबी और न्यूजक्लिक वेब पोर्टल के जरिए अपने नापाक एजेंडे की घुसपैठ करा रहा था।

न्यूजक्लिक समाचार पोर्टल के खिलाफ दिल्ली पुलिस की कार्रवाई के बाद इस बात की एक बार फिर पुष्टि हो गई है कि ड्रैगन (चीन) अपनी साम्राज्यवादी आदत से बाज नहीं आ रहा। चीन भारत में अपने प्रोपेगैंडा को बढ़ाने के लिए भारतीय मीडिया में लगातार निवेश कर रहा है। इस बात का खुलासा बाकायदा अमेरिका के एक समाचार पत्र द न्यूयॉर्क टाइम्स में प्रकाशित लेख में भी किया गया। दिलचस्प बात है कि यह वही समाचार पत्र है जो हमेशा भारत के खिलाफ एजेंडा चलाता रहा है। भारत की सीमा में बार-बार घुसपैठ में मुंह की खाने के बाद चीन ने न्यूजक्लिक के तथाकथित पत्रकारों के माध्यम से भारत के खिलाफ अप्रत्यक्ष युद्ध छेड़ने की कोशिश की है।

न्यूजक्लिक वेब पोर्टल पर चीन से फंडिंग मिलने के आरोप में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में न्यूजक्लिक वेब पोर्टल के कार्यालय और कई पत्रकारों के अनेक ठिकानों पर दिल्ली पुलिस ने छापेमारी की। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम और मुंबई में 100 से अधिक जगहों पर छापेमारी की गई। पुलिस की कार्रवाई में न्यूजक्लिक के संस्थापक और संपादक प्रबीर पुरकायस्थ और एचआर प्रमुख अमित चक्रवर्ती को पहले पुलिस ने गिरफ्तार किया था। यह वही न्यूजक्लिक है जिसने चीन के इशारे पर भारत के नक्शे को बिना कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश के दिखाने की साजिश रची थी।

इससे पहले 10 अगस्त 2023 को अमेरिका से प्रकाशित द न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें आरोप लगाया गया था कि न्यूजक्लिक एक वैश्विक नेटवर्क का हिस्सा है। जिसे अमेरिकी अरबपति नेविल रॉय सिंघम से फंडिंग मिलती रही है। सिंघम को दूर-वामपंथी उद्देश्यों के समाजवादी हितैषी के रूप में जाना जाता है। न्यूजक्लिक को 38 करोड़ रुपये की चीनी कंपनियों द्वारा फंडिंग की बात भी निकलकर सामने आई है। चीन द्वारा भारतीय न्यूज वेब पोर्टल को फंडिंग दिए जाने पर अमेरिकी विभाग के प्रवक्ता वेदांत पटेल ने टिप्पणी की, "हम उन चिंताओं से अवगत हैं और हमने न्यूज पोर्टल के चीन से संबंधों के बारे में रिपोर्टिंग देखी है।"

अदालत में दाखिल पुलिस रिमांड के आवेदन में कई चौकाने वाले तथ्य सामने निकलकर आए हैं। पुलिस ने अदालत को बताया कि गुप्त इनपुट से पता चला है कि पुरकायस्थ, नेविल रॉय सिंघम और सिंघम के स्वामित्व वाली शंघाई स्थित कंपनी के कुछ अन्य चीनी कर्मचारियों ने मेल का आदान-प्रदान किया है जो कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश को भारत का हिस्सा नहीं दिखाने के उनके इरादे को उजागर करता है। यह भारत की एकता और क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर करने के इरादे से किया गया कृत्य है। यह भी पता चला कि न्यूजक्लिक में शेयर धारक गौतम नवलखा भारत विरोधी और गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल रहे हैं। वास्तविकता तो यह है कि सिंघम, पुरकायस्थ

और चक्रवर्ती एक-दूसरे के सीधे संपर्क में थे और कश्मीर के बिना भारत का नक्शा कैसे बनाया जाए और अरुणाचल प्रदेश को विवादित क्षेत्र के रूप में कैसे दिखाया जाए इसकी पृष्ठभूमि में हैं।

यह ध्यान रहे कि ड्रैगन न केवल सीमा पर बल्कि अन्य माध्यमों से भी भारत में घुसपैठ करने की लगातार कोशिश कर करता रहा है। चीन वर्ष 2020 में गलवान घाटी में और 2022 में तवांग घाटी में घुसपैठ के असफल प्रयास कर चुका है। यही नहीं, ड्रैगन की गलत मंशा को भांपने के बाद भारत सरकार ने टिक टॉक, कैम स्कैनर, शेयरइट, क्लीन मास्टर और पबजी जैसे 200 से अधिक चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया था। भारतीय एजेंसियों ने पाया था कि चीन भारतीय अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने, रक्षा प्रणाली की जासूसी करने और भारत से चीन में मनी लॉन्ड्रिंग करने के लिए मोबाइल फोन एप्लिकेशन, गेमिंग एप्लिकेशन और कुछ फर्मों का उपयोग कर रहा था।

वास्तविकता तो यह है यह ड्रैगन का भारत

10 अगस्त 2023 को अमेरिका से प्रकाशित द न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें आरोप लगाया गया था कि न्यूजक्लिक एक वैश्विक नेटवर्क का हिस्सा है। जिसे अमेरिकी अरबपति नेविल रॉय सिंघम से फंडिंग मिलती रही है। सिंघम को दूर-वामपंथी उद्देश्यों के समाजवादी हितैषी के रूप में जाना जाता है। न्यूजक्लिक को 38 करोड़ रुपये की चीनी कंपनियों द्वारा फंडिंग की बात भी निकलकर सामने आई है।

के खिलाफ अप्रत्यक्ष युद्ध है जो भारत के कम्युनिस्टों और तथाकथित पत्रकारों के माध्यम से भारत के खिलाफ छेड़ रखा है। यह अत्यंत चिंताजनक है कि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मानी जाने वाली पत्रकारिता पर देश और राष्ट्र विरोधी साजिश का हिस्सा बनने के लिए सवाल उठ रहे हैं। पत्रकारिता के पेशे से जुड़े लोगों को यह समझने की आवश्यकता है कि पत्रकारिता महज पेशा नहीं है। देश की आजादी के पूर्व जिस तरीके से पत्रकारिता ने अपनी भूमिका निभाई थी, उसकी विश्वसनीयता और अभूतपूर्व योगदान के चलते उसे लोकतंत्र में अहम दर्जा प्राप्त है। आज भी अनेक पत्रकार अपनी भूमिका और जिम्मेदारी को सजगता और सतर्कता के साथ निभा रहे हैं। लेकिन कुछ असामाजिक तत्व धन लोलुपता के चलते पत्रकारिता की आड़ में देश विरोधी गतिविधियों में संलिप्त हो रहे हैं। इन्हीं चंद लोगों की भूमिका के चलते पत्रकारिता भी संदेह के घेरे में आ जाती है।

निस्संदेह, पत्रकारिता की आड़ में ऐसे राष्ट्र विरोधी कार्यों में संलिप्त तथाकथित पत्रकारों का बेनकाब होना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन इस काम को करने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की नहीं है। इस पुनीत कार्य में देश के जागरूक नागरिकों की बेहद अहम भूमिका है और वे यह काम ऐसे राष्ट्र विरोधी समाचार पोर्टलों और चैनलों को पूरी तरह से खारिज कर सकते हैं। ■

पर्यावरण से जुड़ी है सनातन संस्कृति

सनातन संस्कृति और प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए भारत के ऋषियों ने मानव के स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, अध्यात्म आदि का ध्यान रखते हुए, वैज्ञानिक ढंग से ऋतुओं के आधार पर पर्व-त्यौहारों का निर्धारण किया है।

डॉ. आशीष कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इंटरनेशनल स्कूल ऑफ मीडिया एंड एंटरटेनमेंट स्टडीज, न्यूज24

सनातन धर्म प्रकृति से अनन्य रूप से जुड़ा हुआ है। प्रकृति को देवी-देवताओं के विभिन्न रूपों में पूजा जाता है। सनातन संस्कृति के सभी तीज, त्यौहार और पर्व एवं परंपराएं प्रकृति और पर्यावरण से जुड़े हुए हैं। हिन्दुओं के पर्व मौसम परिवर्तन की सूचना देते हैं। भारत के मौसम और ऋतु परिर्वतन के साथ परंपराओं को जोड़ा गया है। भारत भूमि में छह ऋतुएं होती हैं, शरद, बसंत, हेमंत, ग्रीष्म, वर्षा और शिशिर। बसंत, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं को देवी ऋतुएं माना जाता है और शरद, हेमंत और शिशिर ऋतुओं को पितर ऋतुएं कहा जाता है। भारत के ऋषियों ने मानव के स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, अध्यात्म क्षेत्र आदि का ध्यान रखते हुए, वैज्ञानिक ढंग से, ऋतुओं के आधार पर पर्व-त्यौहारों का निर्धारण किया है।

बसंत में जब प्रकृति अपने यौवन को प्रदर्शित कर रही होती है, चारों ओर हरियाली छायी रहती है, पुष्प खिल रहे होते हैं, मौसम एक नए उल्लास से भरा हुआ रहता है, ऐसे में भारतीय नववर्ष, धुलेंडी और नवरात्र मनाये जाते हैं। ग्रीष्म (अषाढ़) में देवशयनी एकादशी, और गुरु पूर्णिमा के त्यौहार पड़ते हैं। वर्षा ऋतु में भगवान भोलेनाथ के महापर्व श्रावण सोमवार का महीने भर उत्साह पर्व रहता है। शरद ऋतु में शारदीय नवरात्र और देवोत्थान एकादशी का पर्व मनाया जाता है। हेमंत ऋतु में दीपावली और गोवर्धन पूजा के त्यौहार मनाए जाते हैं। शिशिर ऋतु में मकर संक्रांति और महाशिवरात्रि के पर्व धूमधाम की धूम रहती है। सनातन संस्कृति के त्यौहारों में प्रकृति संबंध के गहरे वैज्ञानिक सूत्र छिपे हुए हैं, जो मानवीय स्वास्थ्य और विकास के साथ जुड़े हुए हैं।

नवसंवत्सर, इसे सनातन नववर्ष या भारतीय नववर्ष भी कहा जाता है। नवसंवत्सर प्रकृति में नवजीवन का पर्व है। इसकी शुरुआत चैत्र प्रतिपदा को होती है। चैत्र हिन्दू कैलेंडर का पहला महीना होता है। चैत्र प्रतिपदा से सूर्य की गति उत्तर की ओर होने लगती है। नवसंवत्सर पर्व को देश में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में इसे युगदि या उगादि, सिंधु क्षेत्र में चेटी चेडो के नाम से और कश्मीर में इसे नौरोज के नाम से मानाया जाता है।

संक्रांति- सूर्य के राशि परिवर्तन को संक्रांति कहा जाता है। सूर्य का एक महीना जिसे सौर मास कहा जाता है वह राशि परिवर्तन ही है, जिसे सौर संक्रांति कहा जाता है। सूर्य संक्रांति 12 हैं। चार संक्रांतियां विशेष महत्वपूर्ण हैं, जिसमें कर्क, मकर, मेष, तुला

शामिल हैं। कर्क संक्रांति से सूर्य दक्षिणायन होता है और मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण होता है।

बसंत पंचमी- हिंदू पंचांग के अनुसार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को बसंत पंचमी का पर्व मनाया जाता है। बसंत में पशु-पक्षी, मानव, प्रकृति सभी उल्लास से भर जाते हैं। खेतों में पीले पुष्पों से लदी सरसों लहलहाने लगती है। जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगती हैं। आम के पेड़ बौराने लगते हैं। प्रसन्नता और प्रकृति के नव यौवन के साथ बसंत का पर्व मनाया जाता है।

गंगा दशहरा- सनातन संस्कृति में गंगा दशहरा का विशेष महत्व है। इस दिन श्रद्धालु जीवनदायिनी गंगा नदी की पूजा अर्चना और स्नान करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन गंगा स्वर्ग से धरती पर अवतरित हुईं थीं। भगवान शिव ने अपनी जटाओं से गंगा के वेग को थामा था। गंगा दशहरा सनातन धर्म की नदियों के प्रति सम्मान प्रकट करने का त्यौहार है। हिंदू संस्कृति ने प्राचीन काल से ही नदियों के महत्व को समझा है। सनातन ग्रंथों में नदियों को जीवन देने वाली धारा कहा है। अनेकों ऋषियों ने नदियों के अस्तित्व बचाए रखने के लिए सूत्र गढ़े हैं।

होली- होली का त्यौहार मौसम परिर्वतन की सूचना देता है। शिशिर ऋतु की समाप्ति के साथ मौसम में गर्मी बढ़ने लगती है, जिसके कारण पर्यावरण में बैक्टीरिया की वृद्धि हो जाती है। लोगों का स्वास्थ्य भी खराब होना इस मौसम परिर्वतन में आम है। इसलिए होली पर्व के पास साफ सफाई और अग्नि का महत्व बढ़ जाता है। खानपान में भी उसी प्रकार के व्यंजनों का सेवन इस त्यौहार पर किया जाता है जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़कर रोगों से लड़ने में सक्षम बना दो।

शीतला अष्टमी - इस त्यौहार पर वट वृक्ष की पूजा की जाती है। इस त्यौहार पर वट वृक्ष की पूजा करने का उद्देश्य प्रकृति से एकाकार होकर पर्वों को मनाने से है।

आंवला पूजा- यह त्यौहार दीपावली के बाद कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष नवमी तिथि को मनाया जाता है। इसे अक्षय नवमी भी कहा जाता है। यह त्यौहार संदेश देता है कि प्रकृति की पूजा और संरक्षण करने से आध्यात्मिक लाभ और पुण्य प्राप्त होता है। इस त्यौहार पर संदेश जाता है कि वृक्षों में देवताओं का निवास होता है, उनका संरक्षण किया जाना चाहिए। यदि यह कहा जाए की वृक्ष साक्षात देव होते हैं तो यह भी गलत नहीं होगा। ज्योतिष के अनुसार भी जिन व्यक्तियों का बुध अनुकूल न हो उन्हें वृक्षारोपण करना चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए, इससे मन को प्रसन्नता मिलने के साथ ग्रह नक्षत्र भी अनुकूल हो जाते हैं।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार जीवन की उत्पत्ति पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से मिलकर हुई है। प्रकृति के साथ सहचर ही हिंदू संस्कृति की विशेषता है। जहां पूरी दुनिया पृथ्वी को आपदाओं से बचाने के लिए अनेक प्रयास कर रही है, ऐसे में सनातन संस्कृति के प्रकृति सूत्र विशेष सहायक हो सकते हैं।

वट सावित्री- वट को बरगद भी कहा जाता है, मान्यता है कि वृक्ष के नीचे पूजा कर जो कामना की जाती है वह पूर्ण होती है। प्रकृति के प्रति श्रद्धा का इससे अच्छा उदाहरण कहां हो सकता है, जिसमें वृक्ष में ईश्वर का निवास मानकर उसकी आरधना की जाए, उससे अपनी कामना की जाए। हिंदू संस्कृति में वट सावित्री का त्यौहार ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता है। महिलाएं वट सावित्री त्यौहार पति की लंबी आयु और उन्नति के लिए करती हैं। इसके लिए वे वट वृक्ष की पूजा करती हैं।

तुलसी विवाह - भारत में तुलसी पौधे का विशेष धार्मिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से बड़ा महत्व है। तुलसी में सभी देवताओं का निवास माना जाता है। मान्यता के अनुसार जिन घरों में तुलसी लगी होती है, वहां सौभाग्य सदैव निवास करता है। तुलसी के प्रति अपनी अगाध भक्ति को प्रदर्शित करने के लिए कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी को भगवान विष्णु और तुलसी की आराधना की जाती है।

गोवर्धन पूजा- दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा का त्यौहार मनाया जाता है। इसे अन्नकूट पर्व के रूप में भी जाना जाता है। प्रकृति पूजा की दृष्टि से इस पर्व का विशेष महत्व है। भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रज भूमि को अतिवृष्टि से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा अंगुली पर उठाया था। इसका यह संदेश भी है कि प्रकृति के संरक्षण द्वारा सूखा और अतिवृष्टि जैसी आपदाओं से बचा जा सकता है। इस त्यौहार पर गाय आदि के गोमय गोवर्धन को पूजा जाता है। यानि गोवर्धन भगवान के विग्रह का निर्माण गोबर से बनाकर प्रकृति में महत्व को इंगित किया जाता है। कार्तिक प्रतिपदा को मनाए जाने वाला यह त्यौहार प्रकृति सहचर के महत्व को बताता है।

अश्वत्थोपनयन पूजा - अश्वत्थ का अर्थ होता है 'पीपल'। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो यह वृक्ष सर्वाधिक ऑक्सीजन छोड़ने के लिए जाना जाता है। यह वृक्ष रात्रि में भी ऑक्सीजन देता है, जबकि अन्य वृक्ष रात्रि में कार्बनडाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। वैदिक ऋषियों ने इसकी विशेषताओं को देखते हुए इसे पूजन परंपराओं में विशेष महत्व दिया है। इसके लिए अश्वत्थ उपनयन भी कराया जाता है। अश्वत्थ वृक्ष की पूजा वैशाख माह में की जाती है।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार जीवन की उत्पत्ति पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से मिलकर हुई है। प्रकृति के साथ सहचर ही हिंदू संस्कृति की विशेषता है। जहां पूरी दुनिया पृथ्वी को आपदाओं से बचाने के लिए अनेक प्रयास कर रही है, ऐसे में सनातन संस्कृति के प्रकृति सूत्र विशेष सहायक हो सकते हैं। इन सूत्रों में विज्ञान भी है और परंपरा भी जो पृथ्वी को प्राकृतिक संकटों से बचा सकते हैं। ■

प्राचीन विरासत है - ब्रज की सांझी कला

सांझी कला वस्तुत: रूप-सर्जन या रूपांकन कला की जननी है। साधारण भाषा में यह रंगोली और पेंटिंग का मिला-जुला रूप है। हस्त-कौशल तक ही सीमित न रहकर यह कला भक्ति और प्रकृति के नैसर्गिक ज्ञान की अनुभूति है। सांझी ब्रज के मंदिरों की कला है और ईश्वरीय साधना का अंग भी।

मधुकर चतुर्वेदी
संपादक, दैनिक स्वदेश आगरा/झांसी संस्करण

"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा"। हमारी हिंदू संस्कृति ही सर्वप्रथम वह संस्कृति थी, जो वसुधैव कुटुम्बकम् की वाहक बनी। हमारी संस्कृति एक ऐसी विश्व संस्कृति है, जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने की क्षमता से ओत-प्रोत है। और हमारी संस्कृति के तत्वज्ञान में हमारी कलाएं और विरासतें ही हम सब में समरसता और सहकारिता का वातावरण उत्पन्न करती हैं। इसी में हमारी एक प्राचीन विरासत है-'ब्रज की सांझी कला'। ब्रज की सांझी कला भारतीय चित्रकला की अत्यंत उपयोगी मानवीय प्रतिभा है, या कहें कला की संस्कार युक्त कृति है। जैसे ऊबड़-खाबड़ पेड़-पौधों को कांट-छांटकर उन्हें सुरम्य और सुशोभित बनाया जाता है, वही कार्य व्यक्ति की उच्छृंखल मनोवृत्तियों पर नियंत्रण स्थापित करके विविध रंगों से धरा पर अपने आराध्य की सेवा में उकेरा जाता है।

सांझी कला वस्तुतः रूप-सर्जन या रूपांकन (डिजाइन) कला की जननी है। साधारण भाषा में समझें तो यह रंगोली और पेंटिंग का मिला-जुला रूप है। केवल हस्त-कौशल तक ही सीमित न रहते हुए यह कला भक्ति और प्रकृति के नैसर्गिक ज्ञान की अनुभूति की अपेक्षा भी रखती है। सांझी कला ब्रज के मंदिरों की कला है और ईश्वरीय साधना का अंग भी है। कुछ वर्षों पूर्व तक इसका अधिकार संपूर्ण उत्तर भारत में था, लेकिन वर्तमान में यह केवल 'ब्रज' में ही सीमित होकर रह गयी है। सांझी कला भगवान श्रीकृष्ण के समय में ब्रज में ही प्रकट हुई थी। सांझी शब्द 'संध्या' से बना है। पौराणिक आख्यान के अनुसार श्रीकृष्ण ने राधिका को प्रसन्न करने के लिए शरद की संध्या में पुष्पों से सांझी बनायी थी। शरद की सायं में श्रीकृष्ण और राधिका अन्य गोपियों के साथ वन विहार को जाते थे। वहां से विविध पुष्पों को एकत्र कर श्री यमुना जी के कूल पर भूमि पर उन पुष्पों को कलात्मक रूप में प्रदर्शित करते थे। 'सांझ' के समय प्रकट होने वाली यह कला आज हमारी 'सांझी' विरासत बनकर हमारे गुणों को प्रकट कर रही है। बाद में इस कला में पुष्पों के साथ रंगों का प्रयोग भी होने लगा।

वृंदावन स्थित श्री भट्जी के मंदिर में सांझी उत्सव में बनायी मेघ मल्हार की सांझी

ब्रज के मंदिरों में सांझी कला : ब्रज के प्रत्येक मंदिर में सांझी कला का प्रदर्शन आश्विन कृष्ण एकादशी से प्रारंभ होता है और कहीं अमावस्या तो कहीं शरद पूर्णिमा तक होता है। आज ब्रज के मंदिरों में फूलों की सांझी, रंगों की सांझी देखने दूर-दूर से श्रद्धालु ब्रज में आते हैं। ब्रज के ग्रामीण अंचलों में रंगों और पुष्पों के अलावा गोबर की भी सांझी बनायी जाती है। ब्रज के अलावा राजस्थान और गुजरात के कृष्ण मंदिरों ने भी इस कला को अभी जीवंत बनाए हुआ है। ब्रज की सांझी जितनी कलात्मक है, उतनी रागात्मक भी है। ब्रज की सांझी के विकास में श्रीबल्लभ, श्रीहित हरिवंश, श्रीमाध्व गौड़ीया, श्रीनिंबार्क, श्रीललित और श्रीहरिदास संप्रदाय के संतों का बड़ा योगदान है।

महाकवि सूरदास ने अपने पद में सांझी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए राग कल्याण में लिखा- अरी तुम कोन हो री बन में फुलवा बीनन हारी। रतन जटित हो बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी। कृष्णचंद बनवारी आये मुख क्यों न बोलत सुकुमारी। तुम तो नंद महर के ढोटा हम वृषभान दुलारी।

वहीं श्री स्वामी हरिदास जी के एक पद में सांझी के साहित्यिक सौंदर्य को वर्णन इस प्रकार है- **सखी वृंद सब आई जुरीं वृषभान-नृपति के द्वार। बीनति-फूल चलो सब बन राधे, नव सज साजि सिंगार।।. बीनति फूलनि जमुना-कूलनि, खेलति सांझी सांझ।।**

सांझी भले ही ब्रज के मंदिरों में बनायी जाती है लेकिन सांझी को आज भी देश के सभी शास्त्रयज्ञ बड़े मनोभाव से गाते हैं। सांझी का साहित्य हमें यह भी बताता है कि संस्कृति स्वयं राष्ट्र की रक्षा करती है। पराधीनता के युग में विदेशी आक्रमण के बीच, विदेशी शिक्षा के बीच भारतीय कला ने किस प्रकार हमें भारतीय बनाए रखा।

ब्रज की सांझी का स्वरूप : ब्रज की सांझी कला की दृष्टि से बेजोड़ है। इसका कलात्मक आचरण इसके व्यवहार में दिखता भी है। वर्तमान में ब्रज की सांझी कागज के कटे हुए सांचे द्वारा सूखे रंगों से भूमि पर मिट्टी के अष्टकोण चौंतरा पर प्रदर्शित की जाती है। चौंतरा पर सांझी बनाने से पूर्व सिंदूर से रंगी हुई पतली डोरी से एक नक्शा बनाया जाता है। जिसमें किनारे से फूलों की बेल प्रदर्शित होती है। फिर मध्य में श्रीराम, श्रीकृष्ण अथवा अन्य देवताओं की लीला सूखे रंग से बनाने के लिए रखा जाता है। बेल-बूटे, फूल, जाल चारों ओर और मध्य में कोई लीला की मूर्तियां और स्थल, जलाशय, वृक्षावली सब उचित रीति से अत्यंत आकर्षक और कलात्मक रूप से बनाए जाते हैं। प्राकृतिक दृश्य, आकाश, जलाशय, वृक्षावली, पशु, पक्षी, नर-नारी को बड़ी कुशलता से रंगों के माध्यम से उकेरा जाता है। यह सभी रंगों के स्थापत्य और सांझी बनाने वाले की कला-बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

सांझी का मुख्य माध्यम : सांझी बनाने का मुख्य माध्यम कागज पर कटे हुए सांचे होते हैं। यह ज्यामितीय कला पर आधारित है। अनेक बेल-बूटे, देवताओं की प्रतिमाएं, लीलाएं, पशु-पक्षी जाली युक्त होते हैं। देवताओं और उनकी लीला से संबंध रखने वाली मूर्तियों के अनेक खाकों में अंग, वस्त्र, आभूषण, अंगों के रूप जहां जैसी उपयोगिता, वैसा खाकें में काटा जाता है। सांझी के लिए बनाए गए सांचों से सहज पता लगता है कि ब्रज के कलाकारों में चित्रकला का कितना ज्ञान और मौलिकता है। ये सांचें वास्तव में इन कलाकारों के परिश्रम का फल है और चित्रकला के भंडार की अमूल्य निधि, जो सर्वथा संग्रहणीय है।

सांझी की तैयारी : ब्रज में सांझी फूल, गोबर, सूखे रंग, पानी के नीचे और पानी के ऊपर बनायी जाती है। सांझी बनाने में आठ से दस घंटे का समय लगता है। सांचे के अनुरूप सांझी के रंगों को एकत्र करना, सांचों को मिलाना और फिर अपने मनोभावों के अनुरूप रंगों को भरना मुख्य कार्य है। सांचों के कटे भागों का स्मरण रखना, उन पर रंगों की मिलावट करने से ही उचित आकृति का निर्माण होता है। गीले रंग की चित्रकला में आकृति का विशेष ध्यान रखा जाता है तो वहीं सूखे रंग को छानकर प्रयोग किया जाता है। जल पर सांझी बनाना यह बहुत कठिन कार्य है। जल पर रंगों को ठहराने की कला केवल ब्रज में ही प्रचलित है। कलाकार का अपनी अंगुली पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। सांझी में जो बेल-बूटे बनाए जाते हैं, उनके अपने नाम हैं। बीच में किसी देवता की लीला प्रदर्शित होती है।

वृंदावन स्थित श्री भट्जी के मंदिर में सांझी उत्सव में बनायी श्री यमुना पुलिन की सांझी।

भारतीय संस्कृति और हमारी विरासतें ही ऐसी उपहार हैं, जो नृतत्व विज्ञान, मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र और समाज विज्ञान की एक परिष्कृत एवं समन्वित चिंतन-प्रक्रिया है।

हाथरस स्थित श्रीमथुरानाथ जी मंदिर में सांझी उत्सव में बनायी प्रियाकृप्रियतम की नव विलास सांझी

रंग भी प्राकृतिक होते हैं। सफेद रंग चावल पीसकर बनाया जाता है। काला रंग दाल पीसकर, लाल रंग ईंट को पीसकर और ऐसे ही हरा रंग सब्जी व पत्तों की पीसकर बनाया जाता है। रंगों को आपस में मिलाकर भी कुछ रंग तैयार होते हैं। कुछ रंग फूलों के रस और सिंदूर से तैयार होते हैं। दरअसल व्यक्ति और समाज की समस्याओं का समाधान करने के लिए उसे बार-बार संस्कृति और विरासतों का आश्रय लेना ही होता है। क्योंकि केवल भारतीय संस्कृति और हमारी विरासतें ही ऐसी उपहार हैं, जो नृतत्व विज्ञान, मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र और समाज विज्ञान की एक परिष्कृत एवं समन्वित चिंतन-प्रक्रिया है। स्वामी विवेकानंद जी ने एक अवसर पर कहा भी था कि व्यक्ति और समाज की सबसे बड़ी विशेषता एक ही है कि वह सुसंस्कारिता का वातावरण बनाए, परंपराओं को निभाए और उसको अपनाकर हर सदस्य अनुकरणीय-अभिनंदनीय कहलाने का श्रेय प्राप्त करे। सांझी कला इसी का एक रूप है। ■

जो जीता वही पोरस

इतिहास के बहुत से तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अंग्रेजी मानसिकता से लिखा गया है। इसी का एक उदाहरण सिकंदर ने पोरस को हराया भी है। जबकि यह गलत धारणा है। सच्चाई यह है कि पोरस ने सिकंदर को हराकर उसको जीवनदान दिया था।

-डॉ. रामशंकर
प्रधान संपादक, द एशियन थिंकर

सिकंदर महान, जो जीता वही सिकंदर जैसी कहावतें आपने बहुत सुनी होंगी, लेकिन भारत का वह महान शासक जिसने सिकंदर को भी शिकस्त दी उसके बारे में इतिहास के पन्नों में कम ही दर्ज है। राजा पोरस कौन थे इसके बारे में भी अधिक जानकारी इतिहास में नहीं मिलती। जबकि हमारे इतिहास में मुगल आक्रमणकारियों के बखान भरे पड़े हैं। हमारे इतिहास में लिखा गया है कि सिकंदर ने पोरस को हराया। यह गलत है जबकि पोरस ने सिकंदर को हराकर उसको जीवनदान दिया था। यदि सचमुच ही भारतीयों ने पश्चिमी ही नहीं, भारतीय इतिहासकारों को भी गहनता से पढ़ा होता तो वे कहते जो जीता वही पोरस। लेकिन अंग्रेजों की गुलामी और उसी मानसिकता से लिखे इतिहास को पढ़कर अंग्रेज धारणा के रंग में भारतीय भी रंग गये।

इतिहासकारों के अनुसार सिकंदर कभी भी न उदार रहा और न ही उदारता दिखाई। सिकंदर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात अपने सौतेले व चचेरे भाइयों का कत्ल करने के बाद मेसेडोनिया के सिंहासन पर बैठा था। उसने अपने अनेक सहयोगियों को उनकी छोटी-सी भूल से रुष्ट होकर तड़पा-तड़पा कर मारा। क्या एक क्रूर और हत्यारा व्यक्ति महान कहलाने लायक है? ऐसा क्रूर सिकंदर अगर जीतता तो क्या महान सम्राट पोरस के प्रति उदार हो सकता था? यदि पोरस हार जाते तो क्या वे जिंदा बचते और क्या उनका साम्राज्य यूनानियों का साम्राज्य नहीं हो जाता? इतिहास में यह लिखा गया कि सिकंदर ने पोरस को हरा दिया था। यदि ऐसा होता तो सिकंदर मगध तक पहुंच जाता और इतिहास कुछ और होता, लेकिन इतिहास लिखने वाले यूनानियों ने सिकंदर की हार को पोरस की हार में बदल दिया।

पराजित हुए सिकंदर का सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए यूनानी लेखकों ने यह सारा झूठा जाल रचा। स्ट्रेबो, श्वानबेक आदि विदेशी विद्वानों ने तो कई स्थानों पर इस बात का उल्लेख किया है कि मेगस्थनीज आदि प्राचीन यूनानी लेखकों के विवरण असत्य हैं। ऐसे विवरणों के कारण ही सिकंदर को महान समझा जाने लगा और पोरस को एक हारा हुआ योद्धा, जबकि सचाई इसके ठीक विपरीत थी। सिकंदर को हराने के बाद पोरस ने उसे छोड़ दिया था और बाद में चाणक्य के साथ मिलकर उसने मगध पर आक्रमण किया था।

यूनानी इतिहासकारों के झूठ को पकड़ने के लिए ईरानी और चीनी विवरण और भारतीय

इतिहास के विवरणों को भी पढ़ा जाना चाहिए। यूनानी इतिहासकारों ने सिकंदर के बारे में झूठ लिखा था, ऐसा करके उन्होंने अपने महान योद्धा और देश के सम्मान को बचाया। अगर सिकंदर पोरस से जीता होता तो वह पोरस के बाद मगध साम्राज्य पर हमला करता जो की उस वक्त भारत का सबसे बड़ा और शक्तिशाली साम्राज्य था। इतिहास में कहीं भी मगध साम्राज्य और सिकंदर के बीच में टकराव का वर्णन नहीं है। क्योंकि सिकंदर राजा पोरस से हारकर झेलम के तट से ही वापस लौट गया था। इसके साथ ही सिकंदर के हारे हुए सेनापति सेल्यूकस को अपनी बेटी हेलेना से चंद्रगुप्त की शादी करवानी पड़ी थी। क्या कभी कोई जीता हुआ राजा अपनी बेटी की शादी अपने शत्रु से करवाएगा।

राजा पोरस का असली नाम राजा पुरुषोत्तम था जिनको राजा पुरु भी कहा जाता था। चूंकि भारतीय इतिहास को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया था इसलिए राजा पुरु के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। जो भी जानकारियां उपलब्ध हैं वो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही सूचना शिलालेखों, खंडहर की दीवारों में मिली हैं। बाकी का उल्लेख यूनानी इतिहास में है और यूनानी इतिहास में राजा पुरु को राजा पोरस लिखा गया है। ज्ञात तथ्यों के आधार पर मिली जानकारी के अनुसार राजा पोरस ने 340 ईसा पूर्व से 315 ईसा पूर्व तक शासन किया था। राजा पुरुषोत्तम पुरु वंश के राजा थे और इनका साम्राज्य झेलम और चिनाब नदियों के बीच में और आसपास तक फैला हुआ था।

सिकंदर अपने विश्व विजेता बनने के अभियान पर था। उसे कई लोगों ने भारत की समृद्धि के बारे में बताया था। सिकंदर ने जब भारत पर हमला किया (326 ईसा पूर्व) तो उसने तक्षशिला के राजा आम्भी को हराया। राजा आम्भी ने उसे इतनी सारी दौलत दी की सिकंदर आश्चर्यचकित हो गया। उसने सोचा कि जब एक छोटे से राज्य में इतना धन है तो पूरे भारत में कितना धन होगा। उसने आम्भी के साथ मिलकर भारत के अनेक छोटे-छोटे राज्यों पर हमला करने की तैयारी शुरू कर दी। राजा आम्भी ने सिकंदर को पोरस (राजा पुरु जिन्हे राजा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है) के ऊपर हमला करने को कहा।

सिकंदर ने राजा पोरस को आत्मसमर्पण करने का संदेश भिजवाया लेकिन राजा पोरस ने मना कर दिया और युद्ध का न्योता भेज दिया। राजा पोरस और सिकंदर के बीच का युद्ध 326 ईसा पूर्व में झेलम नदी के तट पर लड़ा गया था। इस युद्ध को "बैटल ऑफ हाइडास्पेस" भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि झेलम नदी को ग्रीक भाषा में हाइडास्पेस कहा गया है। झेलम नदी के दोनों तरफ सिकंदर और पोरस की सेनाएं खड़ी थीं। सिकंदर के पास 50 हजार पैदल सैनिक, 7 हजार घुड़सवार थे। पोरस की सेना में 20 हजार पैदल सैनिक, 4 हजार घुड़सवार, 4 हजार रथ और करीब 150 हाथी थे। सिकंदर की सेना ने राजा आम्भी की सहायता से रात में झेलम को पार किया और युद्ध के मैदान में राजा पोरस के सामने आ गया। सिकंदर के 11 हजार सैनिकों ने झेलम पार किया और बाकी के सैनिक झेलम की उत्तर की दिशा की तरफ से आने लगे जहां पर राजा पोरस के पुत्र ने मोर्चा संभाला हुआ था। सिकंदर और पोरस की सेना की बीच भयानक युद्ध शुरू हुआ। राजा पोरस की सेना के हाथियों ने सिकंदर की सेना का बुरा हाल कर दिया।

इतिहास में कहीं भी मगध साम्राज्य और सिकंदर के बीच में टकराव का वर्णन नहीं है। क्योंकि सिकंदर राजा पोरस से हारकर झेलम के तट से ही वापस लौट गया था। इसके साथ ही सिकंदर के हारे हुए सेनापति सेल्यूकस को अपनी बेटी हेलेना से चंद्रगुप्त की शादी करवानी पड़ी थी।

हजारों सैनिक मारे गए और साथ में भयंकर बारिश भी हो रही थी। राजा पोरस के हाथियों और कुशल घुड़सवार सेना ने सिकंदर की सेना का लगभग सफाया ही कर दिया था। सिकंदर अपनी सेना का यह हाल देखकर बहुत ही घबरा गया और उसने राजा पोरस के पास संधि प्रस्ताव भेजा, जिसे राजा पोरस ने स्वीकार कर लिया। इस तरह झेलम के किनारे हुए युद्ध में राजा पोरस की विजय हुई। राजा पोरस और सिकंदर के बीच हुई संधि में लिखा था कि सिकंदर अब यहां से वापस लौट जायेगा। सिकंदर की मजबूरी थी राजा पोरस से संधि करना क्योंकि अगर वो संधि ना करता तो राजा पुरु उसे मार डालते। सिकंदर की सेना का मनोबल भी इस युद्ध के बाद टूट गया था और उसने नए अभियान के लिए आगे बढ़ने से इंकार कर दिया था। सेना में विद्रोह की स्थिति पैदा हो रही थी। इसलिए सिकंदर ने वापस जाने का फैसला किया। सैनिक विद्रोह ओर खराब स्वास्थ्य के कारण वो यूनान के लिए वापस चल पड़ा ओर मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गई थी। इस तरह झेलम नदी के किनारे इस युद्ध में पोरस ने सिकंदर को हराया था। लेकिन हमारे इतिहास में यह कहीं नहीं लिखा गया क्योंकि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने पूरे इतिहास को ही नष्ट कर दिया।

हालांकि ईरानी और चीनी इतिहासकारों ने लिखा है कि पोरस ने किस तरह सिकंदर को हराया और सिकंदर को मजबूरी में समझौता करके वापस लौटना पड़ा। सिकंदर की मृत्यु के बाद उसके सेनापति सेल्यूकस ने अपने स्वामी की इच्छा पूरी करने के लिए भारत पर फिर से आक्रमण किया था जिसमें वो हारा था। चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को हराया था और बाद में संधि में उसकी बेटी हेलेना से शादी कर ली थी। तो जो कहावत हमनें सुनी है जो जीता वही सिकंदर ये कहावत गलत है और यह यूनानी लोग कहते हैं ताकि सिकंदर को महान बना सकें। जबकि सही कहावत तो यह है कि जो जीता वही पोरस...। नए भारत के अभ्युदय में हमें इतिहास के पन्नों को खंगालने की जरूरत है ताकि आने वाली पीढ़ी अपने महान इतिहास को भूल आयातित इतिहास लेखन को ही सच न मान बैठे। ■

स्वावलंबन का मंत्र गुंजाता उत्तर प्रदेश

प्रो.(डॉ.) के. जी. सुरेश
कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विवि, भोपाल

उत्तर प्रदेश स्वावलंबन, स्वदेशी और अपनी ओजस्वी विचारधारा के जरिए आजादी के आंदोलन से लेकर आज तक देश के विकास की भागीदारी में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। लेकिन कालांतर में क्षीण विकास धारा एक बार फिर उज्ज्वल धारा के रूप में प्रवाहमान है।

स्वावलंबन व स्वदेशी की जब भी बात होती है, उत्तर प्रदेश का नाम सबसे अग्रगण्य होता है। ये दोनों शब्द स्वतंत्रता संग्राम के समय से इस प्रदेश के पर्याय बन गए हैं। हम कह सकते हैं कि दोनों इस प्रदेश की गर्भनाल से ही अखंड जुड़े रहे हैं। इस राज्य की वर्तमान सीमाओं से अतीत में यानी उत्तर प्रदेश के निर्माण से पहले जो भी क्षेत्र जुड़े रहे हैं, वे चाहे अवध, आगरा और संयुक्त प्रांत हों या अन्य नामों से अस्तित्व में रहे हों, सभी ने स्वावलंबन और स्वदेशी चेतना का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाई है। बीसवीं सदी के प्रारंभ में स्वतंत्रता आंदोलन की जिस महान चेतना का उदय बंगाल में हुआ था, उसने हिंदी प्रदेशों की ओर या उत्तर से दक्षिण की तरफ विस्तार बरास्ता उत्तर प्रदेश ही किया।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश में घटित घटनाओं और यहां से उभरे अनेकानेक शीर्ष नेताओं के इर्द-गिर्द ही घूमता है। बंगाल विभाजन के बाद जो जन असंतोष उभरा था, उसका बड़ा दिग्दर्शन और प्रदर्शन उत्तर प्रदेश के अंचलों में दिखा। इस प्रदेश ने इसके लिए पहले से जमीन तैयार कर रखी थी। 1857 में मंगल पांडेय का विद्रोह इसकी सबसे बड़ी अभिव्यक्ति थी। इसके बाद एक तरफ महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह की हिलोरे उठ रही थीं तो दूसरी तरफ चौरी चौरा जैसी जगहों पर असंतोष की चिंगारियां भी फूट रही थीं। उस समय सारा देश बंगाल के बाद यदि किसी प्रदेश के समाज को आकांक्षी दृष्टि से देख रहा था तो वह उत्तर प्रदेश था और यहां के लोग उसकी अगुवाई भी कर रहे थे। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के राष्ट्रव्यापी होने के बाद भी उत्तर प्रदेश इसकी धुरी बना रहा। आजादी के बाद की राजनीति में भी इसी वजह से हम उत्तर प्रदेश की विशिष्ट भूमिका पाते हैं।

स्वदेशी आंदोलन को हम गांधी के सत्याग्रह के एक विशिष्ट औजार के रूप में देखते हैं लेकिन असल में स्वदेशी आंदोलन गांधी युग से पूर्व के सबसे सफल आंदोलनों में से भी एक था। अगस्त 1906 में कोलकाता के टाउन हॉल में एक विशाल बैठक की गई थी जिसमें स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा हुई थी। मैनचेस्टर में बने हुए कपड़ों और लिवरपूल के नमक जैसे सामानों के बहिष्कार का संदेश यहीं से प्रसारित हुआ। इसी काल में 'वंदे मातरम' और रवींद्रनाथ टैगोर के 'आमार सोनार बांग्ला' की रचना

हुई और बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया। भारत में स्वदेशी का नारा पहले पहल बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने बंग दर्शन के 1872 के अंक में विज्ञान सभा का प्रस्ताव रखते हुए दिया था। उन्होंने कहा था कि जो विज्ञान स्वदेशी होने पर हमारा दास होता वह विदेशी होने के कारण हमारा प्रभु बन बैठा है। इसके बाद भोलानाथ चंद्र 1874 में मुखर्जी मैगजीन में स्वदेशी का नारा दिया। 1903 की सरस्वती पत्रिका में 'स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार' शीर्षक से एक कविता छपी। जब स्वदेशी के आग्रह ने जोर पकड़ा तब उत्तर प्रदेश के गांवों-कस्बों में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने की अनगिनत घटनाएं आए दिन होने लगी थीं।

इस प्रदेश में बंगाल की तरह पत्रकारिता और साहित्य ने भी स्वदेशी की चेतना को जाग्रत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसा भी कह सकते हैं कि छोटे से लेकर बड़े स्तर तक पर्चों से लेकर पत्र-पत्रिकाओं के बेशुमार प्रकाशन ने लोगों को इस मामले में तैयार किया। स्वाधीनता आंदोलन में कई प्रकाशनों ने बड़ी भूमिका निभाई। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने ब्रिटिश शासकों की यातनाएं भी झेलीं। वर्ष 1919 में यहां से साप्ताहिक 'स्वदेश' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। स्वदेश पत्रिका इसी रुख की ओर उत्तर प्रदेश के जनमानस को मोड़ना चाहती थी। स्वदेशी की भावना को हिंदी के रंग में रंग कर प्रस्तुत करना इसका प्रमुख उद्देश्य था।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा ने भी स्वाभिमान, स्वदेश व स्वावलंबन की भावना को काफी बल प्रदान किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने यहां भाषा व पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना के बीज पहले ही बो ही दिए थे। कई स्वातंत्र्य सैनिकों ने तो पाठशालाएं व अन्य शिक्षण संस्थाएं इसी के लिए संचालित कीं। शिक्षा, पत्रकारिता व स्वतंत्रता आंदोलन की त्रयी ने जनजागृति की लहर पैदा की।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा ने भी स्वाभिमान, स्वदेश व स्वावलंबन की भावना को काफी बल प्रदान किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने यहां भाषा व पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना के बीज पहले ही बो ही दिए थे।

इलाहाबाद इनके बड़े केन्द्र के रूप में उभरा। यहां की कायस्थ पाठशाला ने तो कई धुरंधर पत्रकार, स्वतंत्रता योद्धा व शिक्षाविद दिए। रामानन्द चटर्जी जो बाद में बंगाली पुनर्जागरण की पत्रिका 'मॉडर्न रिव्यू' के संस्थापक बने, इसके प्रारंभिक प्रधानाचार्यों में से थे। 'वंदे मातरम' यहां की प्रार्थना थी। इलाहाबाद के 'स्वराज' के तो आठ संपादक एक के बाद एक जेल में डाले गए। गणेश शंकर विद्यार्थी इसी कायस्थ पाठशाला के दीक्षित थे और मदनमोहन मालवीय भी इससे जुड़े थे। उन्होंने बाद में काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

उ.प्र. में किसान आंदोलन भी साम्राज्यवाद के खिलाफ असंतोष की एक लहर के तौर पर शुरु हुआ। तत्कालीन समाज में चल रहे असंतोष की प्रखर अभिव्यक्ति के रूप में उभरा। यह विभिन्न प्रदेशों में किसानों के अंदर चल रही हलचल का पहली-पहली संगठित अभिव्यक्ति भी थी। 1918 से 20 के बीच किसान आंदोलन, एका आंदोलन आदि के अंतर्गत जगह-जगह किसान सभाएं बनीं। इसी दौरान प्रेमचंद ने प्रेमाश्रम की रचना कर असंतोष को स्वर दिया जिसने असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि भी तैयार की। इस उपन्यास को हिंदी में किसानों की दशा पर लिखा गया पहला उपन्यास माना गया है।

आजादी के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति, पत्रकारिता, उच्च शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में जो प्रतिष्ठा रही है, वह उत्तर भारत में कई राज्यों के लिए ईर्ष्या का कारण कही जा सकती है। राज्य में आर्थिक-क्षेत्रीय असंतुलन, सामाजिक वर्गों की आकांक्षाओं को सही ढंग से समायोजित नहीं कर पाने और राजनीतिक अधःपतन के कारण प्रदेश कई मानकों पर पीछे हो गया। किंतु हाल के वर्षों में आने वाली सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्टें इसकी सामर्थ्य की ताकीद करती हैं और सामाजिक विकास का संकेत करती हैं। ■

संतुलित आहार-विहार से संवरेगा बचपन

डॉ. ओमेन्द्र पाल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, बाल रोग विभाग
इंस्टीट्यूट ऑफ आयुष मेडिक साइंसेज, लखनऊ

बच्चों के स्वस्थ तन-मन के लिए पोषण और प्राकृतिक जीवनशैली जरूरी है। जिससे उनमें शारीरिक व मानसिक विकास के साथ प्रोत्साहन बना रहे। और उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

भोजन एवं आहार विहार का सामान्य नियम बच्चों पर लागू करने से उनके विकास में बाधा उत्पन्न होती है। बच्चों का शरीर एवं मन निरंतर विकास की अवस्था में होने से इन्हें विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। बाल्यावस्था में शारीरिक वृद्धि एवं विकास क्रम निरंतर चलता रहता है। इसलिए इस आयु वर्ग में पोषण की महत्ता अधिक हो जाती है। यदि उचित पोषण न प्राप्त हो तो बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास तो बाधित होता ही है साथ ही अनेक कुपोषण जन्य विकारों से भी शरीर ग्रसित हो जाता है। अतः बाल्यावस्था में स्वस्थ जीवन शैली (आहार, निद्रा एवं व्यायाम) का दिनचर्या में युक्ति पूर्वक पालन बच्चों के उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का आधार है।

आहार - आयुर्वेद के अनुसार षड्रस युक्त आहार दोषों को साम्यावस्था में रखते हुए उत्तम धातु पोषण करता है इसे ही पोषण युक्त संतुलित आहार कहते हैं। आधुनिक परिपेक्ष्य में आहार संतुलित मात्रा में सभी पोषक तत्व कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, जल, मिनरल्स एवं विटामिन्स से युक्त होना चाहिए।

नवजात शिशु का प्रथम एवं एकमात्र आहार मां का दूध है। शिशु के जन्म के तुरंत बाद मां का पहला गाढ़ा पीला दूध बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। अगले छह माह तक केवल मां का दूध ही बच्चे को देना चाहिए। इसमें शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क कोशिकाओं के विकास के लिए सभी आवश्यक तत्व होते हैं।नवजात शिशु की प्रतिरोधक क्षमता संवेदनशील होती है अतः संक्रामक रोगों से बचाव के लिए इस दूध में एंटीबॉडी एवं अन्य लाभकारी तत्व पाए जाते हैं। छः माह के उपरांत बच्चे का शारीरिक व मानसिक विकास काफी तेजी से होता है अतः स्तनपान के साथ-साथ अनुपूरक आहार की आवश्यकता होती है। घर का बना मसाला और गाढ़ा भोजन अनुपूरक आहार की शुरुआत के लिए जरूरी होता है। शैशवावस्था में दुग्धाहार के पश्चात अन्न, मौसमी फल एवं सब्जियां मुख्य स्वास्थ्यप्रद भोजन हैं, जिसे विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों के रूप में देना चाहिए और स्वयं खाने के लिए बच्चों को निरंतर प्रेरित करना चाहिए। ऐसे पोषण युक्त आहार को स्वादिष्ट बनाकर हम बच्चों में हितकर आहार के प्रति रुचि पैदा कर सकते हैं। जैसे हरी सब्जी एवं साग इत्यादि को आटे में गूंथ कर, आंवले की चटनी एवं फलों की स्वादिष्ट चाट बनाकर इत्यादि।

भोजन के साथ 5 से 10 ग्राम गाय के दूध का नियमित रूप से सेवन करना अत्यंत हितकर है। पेय पदार्थों में गोदुग्ध एवं तक्र (छाछ) पौष्टिकता से परिपूर्ण नित्य सेवन करने योग्य द्रव द्रव्य हैं। संपन्न परिवारों में तो बच्चों को उत्तम पोषण दिया जा सकता है लेकिन कम आय वाले परिवारों को इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। हालांकि इसके लिए मध्यम वर्ग के पास चना, सत्तू, मूंगफली, गुड़ जैसे पदार्थ सहजता एवं सामान्य मूल्य पर उपलब्ध खाद्य पदार्थ सभी पोषक तत्वों से परिपूर्ण होते हैं। इससे निर्मित आहार सस्ता, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होता है। इसके जरिए निम्न आय वर्ग के अभिभावक भी अपने बच्चों को आसानी से पोषण युक्त भोजन उपलब्ध करा सकते हैं।

भोजन विधि - उत्तम पोषण युक्त आहार भी यदि विधि विधान पूर्वक नहीं किया जाता है तो भी शरीर को उसका समुचित लाभ प्राप्त

नहीं होता है। अतः बच्चों को सर्वप्रथम समय पर भोजन करने की आदत डालनी चाहिए- जैसे नाश्ता सुबह 7:00 से 9:00 बजे तक, दोपहर भोजन 12:00 से 1:00 बजे, सायं जलपान 4:00 से 5:00, रात्रि भोजन सायं 7:00 से 8:00 बजे तक कर लेना चाहिए। बच्चों को अभिभावक यथासंभव अपने साथ बैठकर भोजन कराएं। टेलीविजन या मोबाइल देखते हुए खाना खाने की आदत कभी ना डालें।

पोषण को प्रभावित करने वाले आहार - बच्चों को क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए इसका भी महत्वपूर्ण स्थान है। आजकल फास्ट फूड, जंक फूड एवं डिब्बाबंद खाना बच्चों की पहली पसंद है। बच्चे घर के बने पौष्टिक भोजन की जगह पिज्जा, बर्गर इत्यादि खाना अधिक पसंद करते हैं। यह पोषण रहित एवं हानिकारक तत्वों से युक्त होते हैं। इसलिए अभिभावक खुद भी इन्हें खाने से बचें और बच्चों को घर का पौष्टिक आहार स्वादिष्ट बनाकर खाने में दें।

निद्रा - आयुर्वेद में निद्रा को स्वभावतः पुष्टि कारक बताया गया है। निद्रा शारीरिक एवं मानसिक थकान को मिटाकर तनाव को कम करती है। इसलिए बच्चों को कम से कम

माता पिता द्वारा अपनाई गई जीवन शैली का सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बच्चे बताने या समझाने की अपेक्षा प्राकृतिक रूप से अपने आसपास के वातावरण से सीखते हैं और उसे अपनाते हैं। अभिभावक स्वयं स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं एवं घर का वातावरण ऐसा बनाएं कि बच्चा भी स्वयं ही हितकर आहार-विहार की ओर प्रेरित हो।

8 से 10 घंटे की भरपूर नींद लेनी चाहिए। रात्रि में निद्रा योग्य वातावरण के लिए माता-पिता को स्वयं भी सोने से पहले मोबाइल का प्रयोग करने से बचना चाहिए। सोते समय बच्चों के सिर पर तेल से अभ्यंग करें एवं शिक्षाप्रद कहानियां सुनाएं। इससे बच्चा निश्चित होकर पूरी नींद सोता है।

व्यायाम - शारीरिक रूप से क्रियाशील न रहने से पोषण युक्त आहार भी बालक में अति पोषण या स्थौल्य जैसे विकारों को जन्म दे सकता है। अतः नियमित व्यायाम दिनचर्या का अभिन्न अंग होना ही चाहिए। बच्चों में व्यायाम की सर्वोत्तम विधि है घर के बाहर खेले जाने वाले खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो इत्यादि। खेलों से बच्चे शारीरिक एवं मानसिक रूप से दृढ़ होते हैं और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। योग मन की चंचलता को नियंत्रित करने में सहायक होता है। अतः बच्चों को माता-पिता के साथ योगाभ्यास मुख्य रूप से प्राणायाम करने की दिनचर्या बनानी चाहिए। शोध में यह पाया गया है कि नियमित योगाभ्यास करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, बार बार बीमार नहीं पड़ते और पोषण भी प्रभावित नहीं होता।

माता पिता द्वारा अपनाई गई जीवन शैली का सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बच्चे बताने या समझाने की अपेक्षा प्राकृतिक रूप से अपने आसपास के वातावरण से सीखते हैं और उसे अपनाते हैं। अभिभावक स्वयं स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं एवं घर का वातावरण ऐसा बनाएं कि बच्चा भी स्वयं ही हितकर आहार-विहार की ओर प्रेरित हो। इस प्रकार संतुलित आहार-विहार एवं पोषण के संबंध में उपरोक्त बिंदुओं को दिनचर्या में अपनाने से हमारे बच्चे निरोगी, स्वस्थ एवं सुपोषित रहेंगे। ■

उत्सव और उल्लास का मास

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

कार्तिक मास के उत्सव प्रकृति और नदी केन्द्रित हैं। अपने आस-पास जो भी नदी, झील, सरोवर और पवित्र स्थल होते हैं, उसके धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व होते हैं। इसलिए वहां पर स्नान, दान और पर्यटन का महात्मय होता है। मसलन कपूरथला में व्यास की एक धारा बहती है, उसे कांजली कहते हैं। तो कार्तिक माह में वहां के स्नान को कांजली नहान कहते हैं। इसी क्रम में हमीर उत्सव : (नवम्बर का पहला सप्ताह) ये उत्सव पर्वत प्रेमियों को हिमाचल आने का एक अनुरोध है। इसी तरह करवाचौथ, अहोई अष्टमी, धनतेरस, दीपावली उत्सव भी अद्वितीय है। दीपोत्सव के अगले दिन पर्यावरण और समतावाद का संदेश देता, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट का उत्सव दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाला कृष्ण प्रेमी परिवार सामूहिक रूप से मनाता है। यम द्वितीया का त्यौहार, भाई दूज है। मथुरा में बहन भाई यमुना जी में नहा कर मनाते हैं। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को विश्राम घाट पर यमराज और यमुना जी का मिलन हुआ था। श्री राम जानकी विवाह उत्सव (17 नवम्बर) 'विवाह पंचमी' श्री राम और सीता जी की शादी की वर्षगांठ को हम उत्सव की तरह मनाते हैं। देश विदेश से लोग जनकपुर नेपाल पहुंचते हैं। इसमें मटकोर में कमला नदी का पूजन होता हैं।

सादगी, पवित्रता, लोकजीवन की मिठास का पर्व छठ (19 नवम्बर) है। छठ पर्व में प्रकृति पूजा सर्व कामना पूर्ति, सूर्योपासना, निर्जला व्रत के इस पर्व को स्त्री, पुरुष और बच्चों के साथ अन्य धर्म के लोग भी मनाते हैं। सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु सबसे जो कुछ उसे प्राप्त हैं, उसके आभार स्वरूप छठ मइया की कुटुम्ब, पड़ोसियों के साथ पूजा करना है, जल में खड़े होकर डूबते और उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। कृष्ण और बलराम कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से गाय चराने गए और गोपाल बने। गोपाष्टमी पर्व (20 नवम्बर) को है। यह उत्सव श्री कृष्ण और उनकी गायों को समर्पित है।

माजुली महोत्सव (21 से 24 नवम्बर) पूर्वोत्तर भारत में दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप, असम में लुइत नदी के तट पर मनाया जाता है। जो द्वीप की समृद्ध संस्कृति और प्रचुर प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाता है। दक्षिण भारत में भी कार्तिक मास के पावन अवसर पर काकड़ आरती का प्रारंभ परम्परानुसार शरद् पूर्णिमा के

संपूर्ण कार्तिक मास त्यौहारों का पर्याय है। इसमें प्रकृति, नदी, धर्म, संस्कृति और लोक कथाओं का समावेश है। इसलिए सभी उत्सवों के मर्म को समझकर हमें पर्यावरण की रक्षा कर नदियों को प्रदूषित होने से बचाना होगा। क्योंकि नदी नहीं तो हम नहीं। तभी जाकर त्यौहारों का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा।

दूसरे दिन से होता हैं। देवउठनी एकादशी (24 नवम्बर) के अवसर पर काकड़ आरती को भव्य स्वरूप दिया जाता है। तुलसी सालिगराम के विवाह उत्सव को मनाया जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा को पवित्र नदी, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, कुरुक्षेत्र, प्रयागराज, अयोध्या और काशी में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। देव दीपावली (26 या 27 नवम्बर) गंगा दीपावली के रूप में मनाते हैं। इसी दौरान गढ़मुक्तेश्वर में स्नान करने का विशेष महत्व है। गुरू नानक जयंती (27 नवम्बर) को उत्सव की तरह मनाया जाता है। जैन का धार्मिक दिवस प्रकाश पर्व है। तमिलनाडु में अरुणाचलम पर्वत की 13 किमी की परिक्रमा की जाती है। यहां कार्तिक स्वामी का मंदिर है।

सामाजिक समरसता का प्रतीक 'वन भोजन' भी कार्तिक मास में आयोजित होता है। पुष्कर मेला 20 नवम्बर से शुरु होकर 27 नवम्बर तक चलता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन लाखों श्रद्धालु पुष्कर झील में स्नान करके ब्रह्मा जी के मंदिर में दर्शन करते हैं।

वर्षा अधिक होने के कारण सूर्य देवता (सलजोंग) के सम्मान में गारो आदिवासी नवम्बर के दूसरे सप्ताह में 'वांगला' नामक त्यौहार मनाते हैं। रण उत्सव (1 नवम्बर से 20 फरवरी) गुजरात का रण उत्सव अपनी रंगीन कला और संस्कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। सोनपुर मेला (20 नवम्बर से) गंगा और गंडक नदी के संगम पर एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। बूंदी महोत्सव (11 से 13) राजस्थान के हड़ौती क्षेत्र में छोटा सा बूंदी अपनी ऐतिहासिक वास्तुकला और संस्कृति के लिए जाना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा की रात में महिला पुरुष दोनों पारंपरिक वेशभूषा पहनकर चंबल नदी के तट पर दिया जला कर, आशीर्वाद लेते हैं।

इस तरह संपूर्ण कार्तिक मास त्यौहारों का महीना है। इसमें प्रकृति, नदी, धर्म, संस्कृति और लोक कथाओं का समावेश होता है। इन सभी उत्सवों में प्रकृति वनस्पति और जल है। इन सभी उत्सवों के मर्म को समझकर हमें पर्यावरण की रक्षा कर नदियों को प्रदूषित होने से युद्ध स्तर से बचाना होगा क्योंकि नदी नहीं तो हम नहीं। तभी जाकर त्यौहारों का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा। ■

विशेष समाचार

21 सितंबर : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने ग्रेटर नोएडा में पहली उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

22 सितंबर : नई दिल्ली में 'डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना : वित्तीय समावेशन और उत्पादकता बढ़ाने में मददगार' विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्टी संपन्न।

23 सितंबर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में 16 अटल आवासीय विद्यालयों का लोकार्पण और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का किया शिलान्यास।

24 सितंबर : नौ वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी।

25 सितंबर : भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशियाई खेल में स्वर्ण पदक जीतकर रचा इतिहास।

26 सितंबर : सुप्रसिद्ध अभिनेत्री वहीदा रहमान को दादा साहब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार।

27 सितंबर : अंगदान देशभक्ति का काम है, देश भक्ति का ही स्वरूप है। अंगदाता परिवार देवता समान हैं- सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत।

28 सितंबर : कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य के जरिए कृषि में बदलाव के प्रणेता, प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. एमएस स्वामीनाथन का निधन।

29 सितंबर : स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) चरण 2 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सौ प्रतिशत गांवों के द्वारा ओडीएफ प्लस स्थिति हासिल करने के लिए पीएम ने सराहना की।

30 सितंबर : एशियाई खेल 2022 में स्क्वैश पुरुष टीम ने जीता स्वर्ण पदक।

1 अक्टूबर : प्रधानमंत्री मोदी ने तेलंगाना में 13,500 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का किया शिलान्यास।

2 अक्टूबर : राजस्थान के चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक सांवलिया सेठ मंदिर में प्रधानमंत्री ने दर्शन और पूजा-अर्चना की।

3 अक्टूबर : एशियाई खेलों 2022 में महिला भाला फेंक स्पर्धा में अन्नू रानी ने जीता स्वर्ण पदक।

4 अक्टूबर : हल्दी का अनुसंधान और निर्यात बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड के गठन को अधिसूचित किया गया।

5 अक्टूबर : प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश के जबलपुर में 12,600 करोड़ और राजस्थान के जोधपुर में लगभग पांच हजार करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी।

6 अक्टूबर : भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने एशियाई खेलों में जीता स्वर्ण पदक।

7 अक्टूबर : राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय कार्यवाहिका अलका ताई ने कहा कि स्त्री सृष्टि के नवसृजन और संवर्धन की शक्ति रखती है। अगली पीढ़ी की मार्गदर्शक भी स्त्री होती है।

8 अक्टूबर : मरीजों के लिए नवीनतम नैदानिक और चिकित्सीय तौर-तरीकों का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अपनाएं छात्र - केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र।

9 अक्टूबर : मेरठ (उप्र.) के सकौती ग्राम में 'अनुसूचित जाति उप योजना' के अंतर्गत 'कृषक प्रशिक्षण एवं बीज वितरण' कार्यक्रम का आयोजन।

10 अक्टूबर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर में दर्शन किये।

11 अक्टूबर : हरियाणा के रोहतक में ब्रह्मलीन महंत श्री चांदनाथ योगी जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा।

12 अक्टूबर : उत्तराखंड के पार्वती कुंड और जोगेश्वरधाम में प्रधानमंत्री ने की पूजा-अर्चना।

13 अक्टूबर : भारत में जल्द ही विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मेट्रो सेवा नेटवर्क उपलब्ध होगा : केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी।

14 अक्टूबर : मुंबई में 141वें अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) सत्र का उद्घाटन।

15 अक्टूबर : सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन जम्मू में काली माता मंदिर में पूजा अर्चना की और कठुआ में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए।

16 अक्टूबर : ओलंपिक में शामिल हुए 5 नए खेल। आईओसी से मिली मंजूरी। बेसबॉल/ सॉफ्टबॉल, क्रिकेट (टी20), फ्लैग फुटबॉल, लैक्रोस (छक्के), और स्क्वैश हुए शामिल।

17 अक्टूबर : सुप्रीम कोर्ट ने सेम सैक्स मैरिज को भारत में मान्यता देने से किया इनकार। कोर्ट के इस फैसले का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने स्वागत किया। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि उच्चतम न्यायालय का समलैंगिक विवाह संबंधी निर्णय स्वागतयोग्य है।

18 अक्टूबर : विपणन सीजन 2024-25 के लिए सभी अनिवार्य रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि को मंजूरी।

19 अक्टूबर : भारत के कार्तिकेयन मुरली ने वर्तमान शतरंज चैंपियन और विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन पर जीत हासिल की।

20 अक्टूबर : प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में भारत की पहली रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) 'नमो भारत' का शुभारंभ किया। ■

1. श्री रामचरितमानस किस युग से सम्बन्धित है

a) त्रेतायुग
b) सत्ययुग
c) द्वापरयुग
d) कलियुग

2. श्री रामचरितमानस में कुल कितने अध्याय हैं

a) 5
b) 7
c) 9
d) 11

3. महर्षि वाल्मीकि के बचपन का नाम क्या था ?

a) रत्नाकर
b) रत्नाभ
c) रत्नसेन
d) रत्नेश

4. रामायण के सुंदरकांड में कितने दोहे हैं?

a) 50
b) 60
c) 68
d) 70

5. रामायण किसकी रचना है?

a) महर्षि वाल्मीकि
b) आचार्य तुलसीदास
c) ऋषि वशिष्ठ
d) ऋषि विश्वामित्र

6. गरुड़ ने नागपाश से किसको मुक्त किया था ?

a) श्री राम
b) जामवन्त
c) हनुमान
d) लक्ष्मण

7. राम के लिए 14 वर्ष का वनवास किसने मांगा था ?

a) कैकेयी
b) कौशल्या
c) मन्थरा
d) उर्मिला

8. लंका में माता सीता किस वृक्ष के नीचे बैठी थीं?

a) वट
b) पीपल
c) अशोक
d) आम

9. समुद्र मंथन से प्राप्त दिव्य गाय का नाम क्या था?

a) ऐरावत
b) कामधेनु
c) नीलकंठ
d) अग्निहोत्र

10. दीपावली किस तिथि को मनायी जाती है?

a) दशमी
b) एकादशी
c) अमावस्या
d) पूर्णिमा

उत्तर

1. (a), 2.(b), 3.(a), 4.(b), 5.(a), 6.(d), 7.(a), 8. (c) , 9. (b), 10. (c)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
1 नवम्बर, 1920	केसरीचंद जयन्ती (आजाद हिन्द फौज के सिपाही)
2 नवम्बर, 1780	महाराजा रणजीत सिंह जयन्ती
3 नवम्बर, 1947	नरमोहन दोसी जयन्ती (प्रचारक)
4 नवम्बर, 2015	मधुकर लिमये की पुण्यतिथि (पूर्वोत्तर भारत के मित्र)
5 नवम्बर, 1942	गुलाब सिंह बलिदान दिवस (स्वतंत्रता सेनानी)
6 नवम्बर, 1882	महेश चरण सिन्हा जंयती (हिन्दी में विज्ञान लेखक)
7 नवम्बर, 1888	चंद्रशेखर वेंकट रमन जयन्ती (नोबेल पुरस्कार विजेता)
8 नवम्बर, 1903	श्री दिगम्बर स्वामी जयन्ती
9 नवम्बर, 2000	उत्तराखंड स्थापना दिवस
10 नवम्बर, 1920	कुशल संगठक दत्तोपंत ठेंगड़ी जयन्ती
11 नवम्बर, 1675	गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस
12 नवम्बर, 1880	पांडुरंग महादेव बापट जयन्ती
13 नवम्बर, 1904	भोगीलाल पंड्या जयन्ती (वनवासियों के मित्र)
14 नवम्बर	विश्व मधुमेह दिवस
15 नवम्बर 2000	झारखंड स्थापना दिवस
16 नवम्बर, 1883	बाबूराव विष्णु पराड़कर जयन्ती (हिन्दी पत्रकारिता के जनक)
17 नवम्बर, 1928	लाला लाजपतराय पुण्यतिथि (पंजाब केसरी)
18 नवम्बर, 1916	मोरुभाऊ मुंजे जयन्ती (तेजस्वी कार्यकर्ता एवं प्रचारक)
19 नवम्बर, 1917	भाऊराव देवरस जंयती (उ.प्र. में संघ कार्य के सूत्रधार)
20 नवम्बर, 1877	डॉ. लक्ष्मण वासुदेव परांजपे जयन्ती (वैकल्पिक सरसंघचालक)
21 नवम्बर, 1938	रोशनलालजी जयन्ती (उत्तराखंड में बाल एवं सायं शाखा के आग्रही)
22 नवम्बर, 1830	वीरांगना झलकारी बाई जयन्ती
23 नवम्बर, 1937	जगदीश चन्द्र बोस पुण्यतिथि (भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक)
24 नवम्बर, 2002	कृष्णचंद्र गांधी पुण्यतिथि (सरस्वती शिशु मंदिर योजना के जनक)
25 नवम्बर, 1890	पंडित राधेश्याम जयन्ती
26 नवम्बर	भारत का संविधान दिवस
27 नवम्बर, 1907	हरिवंश राय बच्चन जयन्ती (प्रसिद्ध लेखक और कवि)
28 नवम्बर, 1885	भाई हिरदाराम जयन्ती (क्रान्तिकारी)
29 नवम्बर, 1869	ठक्कर बापा जयन्ती (सेवाव्रती, गरीबों के मसीहा)
30 नवम्बर, 1954	भूषणपाल जयन्ती (प्रचारक)

प्रेरणा विचार

प्रिय पाठकगण आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका द्वारा 05 जनवरी 2024 से 15 जनवरी 2024 के बीच पाठकों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। जिसमें जुलाई 2023 से दिसम्बर 2023 (6 माह) की पत्रिकाओं में से प्रश्न पूछे जाएंगे। आपके पास जुलाई 2023 से प्रेरणा विचार पत्रिका का प्रत्येक अंक पहुंचेगा। जिसे आपको ध्यान से पढ़ना होगा तथा उन्हीं अंकों में से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर देना होगा। परीक्षा ऑनलाइन आयोजित होगी।

ऑनलाइन परीक्षाएं दो वर्गों में आयोजित की जाएंगी।

- ♦ वर्ग 1- विद्यार्थी
- ♦ वर्ग-2- सामान्य

- ☞ सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पत्र (ई-प्रमाण पत्र) मिलेगा।
- ☞ दोनों वर्गों के प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह दिया जाएगा।

नोट :- 5 अक्टूबर 2023 से 5 नवम्बर 2023 के बीच होनी वाली ऑनलाइन प्रतियोगिता अब 05 जनवरी से 15 जनवरी, 2024 के बीच होगी।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133754) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रेरणा विमर्श 2023

'स्व'- भारत का आत्मबोध

(15,16 एवं 17 दिसम्बर, 2023)

उद्घाटन

15 दिसम्बर
(शुक्रवार)
अपराह्न 3.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

उद्घाटन
एवं
प्रदर्शनी का अनावरण

विमर्श

16 एवं 17 दिसम्बर
(शनिवार/रविवार)
प्रातः 10.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

पत्रकार विमर्श/लेखक विमर्श
मीडिया शिक्षक/छात्र विमर्श
डिजिटल माध्यम विमर्श
प्रेरणा चित्रभारती लघु फिल्मोत्सव

समापन

17 दिसम्बर
(रविवार)
अपराह्न 3.30 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

समापन समारोह

आयोजक

प्रचार विभाग, मेरठ प्रांत/प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा
एवं
जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

कार्यक्रम स्थल
सभागार
गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

प्रेरणा विमर्श कार्यालय
प्रेरणा भवन, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
ई-मेल prernavimarsh2023@gmail.com

संपर्क सूत्र: 9650600195, 9811077950, 9354133754, 0120 4565851

Prerna Media | Prernasmedia | 9891360088 | @PrernaMedia

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

शुभ आयोजन इवेंट मैनेजमेंट कंपनी
की ओर से सभी देशवासियों को
दीपोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाएं।
-मोनिका चौहान

समस्त देशवासियों को प्रकाश पर्व
दीपोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाएं।
-प्रीति दादू

डॉ. सुनेत्री आयुर्वेद सेंटर
की ओर से सभी देशवासियों को
दीपोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाएं।
-डॉ. सुनेत्री सिंह

समस्त देशवासियों को सनातन पर्व
दीपोत्सव
की कोटि-कोटि शुभकामनाएं।
-रवि श्रीवास्तव

समस्त देशवासियों को प्रकाश पर्व
दीपोत्सव
की अनन्त शुभकामनाएं।
-रमन चावला

समस्त देशवासियों को प्रकाश पर्व
दीपोत्सव
की ढेरों शुभकामनाएं।
-वीरेन्द्र सेमवाल

सभी देशवासियों को पर्वों के समूह
दीपोत्सव
की अनन्त शुभकामनाएं।
- पायलट राकेश त्यागी

समस्त देशवासियों को
दीपोत्सव
की अनन्त शुभकामनाएं।
- प्रकाश श्रीवास्तव